M/s. SHANTA SERVICE STATION
Bharat Petroleum
Quality & Quantity
Powai Chowk, Behind Shreeram Cinema, Ulhasnagar-4.
Tel.: 0251-2584077
Pure for Sure

सिर्फ 2 रू. ठाणे जिले का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

दैनिक धनुष धारी

संस्थापक प्रधान संपादक स्व. श्री दिलीप जे. लालवानी

वर्ष-32, अंक 102, उल्हासनगर, शुक्रवार 28 मार्च, 2025 (पृष्ठ 6) | Mob. No. 9325937797 | E-mail Add.:- newsddd@gmail.com dailydhanushdhari@yahoo.com | Post Regd No.THC/111/2024-2026 RNI No. 68359/93,

dhanushdharinews | Dhanushdhari | DhanushdhariN | Website - www.dailydhanushdhari.com

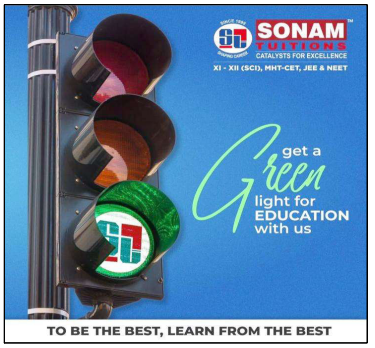

चेटीचंड महाबाइक रैली 29 मार्च को भारी संख्या में शामिल होने की अपील

उल्हासनगर (नि.स.)। सिंधी समाज के नववर्ष चेटीचंड के महापर्व पर हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उल्हासनगर शहर में महाबाइक रैली का आयोजन कल शनिवार दिनांक 29 मार्च को किया गया है। यह महाबाइक रैली शनिवार सुबह 10 बजे उल्हासनगर-1 स्थित रिसेंजी एंटीलिया से शुरू होगी और उल्हासनगर-5 स्थित जय झुलेलाल प्रवेश द्वार तक जाकर संपन्न होगी।

ज्ञात हो कि चेटीचंड महापर्व से एक दिन पहले महाबाइक रैली का आयोजन उल्हासनगर-1 स्थित रिजेंसी एंटीलिया से किया जाता है। यह रैली रिसेंजी एंटीलिया से बिलाँ गेट, उल्हासनगर-1 बस स्टैंड से गोल मैदान निरंकारी हॉल, नेहरू चौक, फर्निचर बाजार, शिवाजी चौक, शास्त्री चौक सेक्शन 17, हीरा घाट, पवाई चौक, उल्हासनगर-4 मेन बाजार, शहीद हेमू कालानी चौक सेक्शन 25, नेताजी चौक, गांधी रोड, उल्हासनगर-5 मुख्य बाजार, चालाही साहेब, दूध नाका से होते हुए कैलाश कालोनी स्थित जय झुलेलाल प्रवेश द्वार तक संपन्न होगी। इस महाबाइक रैली में शामिल होने की अपील महेश सुखरामानी, भारत गंगोत्री, शंकर नागरानी, हीरो बोथा, अनिल बठिजा, सोनू विशनानी आदि कमेटी सदस्यों व कार्यकर्ताओं ने की है। इस रैली में सिंधी समाज के सभी सामाजिक संस्थाओं जिसमें व्यापारी संगठन, वरिष्ठ नागरिक, डांस क्लब, योगा क्लब, कोरेके क्लब, सिंधी कलाकार आदि को बड़ी संख्या में शामिल होने की अपील की गई है।

विधायक कुमार आयलानी की दो महत्वपूर्ण समितियों पर नियुक्ति

उल्हासनगर (प्रे.वि.)। तीन बार विधायक पद पर जीत दर्ज कर चुके भाजपा के वर्तमान विधायक कुमार आयलानी की राजनीतिक ताकत दिनों दिन बढ़ रही है. इसी कड़ी में महाराष्ट्र सरकार स्तर पर उन्हें कई महत्वपूर्ण जवाबदारियां सौंपी जा रही है. मिली जानकारी के अनुसार 141 विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के विधायक कुमार आयलानी को विधानमंडल की दो महत्वपूर्ण समितियों के पदों की जवाबदारी दी गयी है. विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर द्वारा श्री आयलानी को यह जवाबदारी सौंपी गई है, जो कि उल्हासनगर के लिए गर्व की बात है, क्योंकि प्रदेश सरकार स्तर पर पहली बार उल्हासनगर के किसी विधायक को इतनी महत्वपूर्ण जवाबदारी सौंपी गयी है। विधायक कुमार आयलानी को जिन दो समितियों में लिया गया है उनमें विधानमंडल की अल्पसंख्यक कल्याण समिति तथा विधायक निवास व्यवस्था समिति का समावेश है। इन दोनों महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति पर विधायक कुमार आयलानी ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे व अजीत पवार, महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर व भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे पूरी निष्ठा और लगन से उन्हें सौंपी गयी जवाबदारियों का निर्वहन करेंगे

Staff Required
(SINDHI MALE)

Qualification-B.COM PASSED
FOR ACCOUNTS
& FOR SALESMAN
Qualification- 10TH PASSED

CONTACT : MR. RAJESH
MOB.NO. 9307579475

उल्हासनगर मनपा क्षेत्र में 100 दिनों के लिए 7 सूत्री कार्य योजना लागू करने का आदेश

उल्हासनगर (नि.स.)। महाराष्ट्र सरकार ने एक सरकारी निर्णय के माध्यम से महानगरपालिका को 100 दिनों के लिए 7 सूत्री कार्य योजना लागू करने का आदेश दिया है। तदनुसार, सुगम जीवन अनुभाग के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों को क्रियान्वित करने का उल्हासनगर महानगरपालिका द्वारा निर्णय लिया जा रहा है। मनपा सदस्यों के कार्यकाल की समाप्ति के साथ, उल्हासनगर शहर के सम्मानित नागरिकों और प्रभाग समिति स्तर पर प्रशासन के बीच सामंजस्यपूर्ण संचार बनाए रखना, शिकायतों का शीघ्र निवारण करना और प्रशासनिक निर्णयों के साथ-साथ किए जा रहे विकास कार्यों में सम्मानित नागरिकों की आशाओं और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करना आवश्यक है। नागरिकों की समस्याओं/शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान करना भी आवश्यक है। जिससे नागरिकों को मनपा मुख्यालय आने की आवश्यकता नहीं होगी। इसके लिए नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए सहायक आयुक्त एवं प्रभाग समिति के स्तर पर प्रति सप्ताह एक दिन 'जन संवाद सभा' का आयोजन किया जाना चाहिए। सहायक आयुक्त, प्रभाग समिति को प्रत्येक सोमवार को दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक प्रभाग समिति कार्यालय में उपस्थित रहना होगा तथा जन संवाद बैठक की अध्यक्षता करनी होगी।

जनसंवाद बैठक में जनस्वास्थ्य विभाग, लोक निर्माण विभाग, जलापूर्ति विभाग, सम्पत्ति कर विभाग, नगरीय निवोजन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी/प्रभाग स्तरीय अधिकारी अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें। सहायक आयुक्त, प्रभाग समिति ने सभी सम्मानित नागरिकों को सूचित किया है कि वे मनपा आयुक्त और प्रशासक द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों, महाराष्ट्र सरकार और महानगरपालिका की विभिन्न योजनाओं और महत्वपूर्ण परिपत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। इसके बाद वे प्रत्येक सम्मानित नागरिक को हॉल में बुलाकर उनकी शिकायत दर्ज करेंगे और संभव हुआ तो संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर उसका समाधान भी निकालेंगे। यदि शिकायत के निवारण के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है, तो सहायक आयुक्त, प्रभाग समिति संबंधित सम्मानित नागरिक को सूचित करेंगे और शिकायत दर्ज करेंगे।

आयुक्त एवं प्रशासक कार्यालय से संबंधित शिकायतों को उपायुक्त (सामान्य प्रशासन विभाग) को भेजेंगे। उपरोक्त शिकायतों के संबंध में प्रत्येक मंगलवार को प्रात: 11 बजे से दोपहर 12 बजे तक अतिरिक्त आयुक्त के साथ समस्त संबंधित अधिकारियों की बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक में निराकरण न होने वाली शिकायतों के साथ-साथ अत्यधिक समय या नीतिगत निर्णयों से संबंधित शिकायतों के संबंध में बैठक की जाएगी। आयुक्त एवं प्रशासक की बैठक प्रत्येक सोमवार (अधिमानत: दोपहर के बाद) संबंधित विभाग प्रमुखों के साथ आयोजित की जाएगी। मुख्यालय में अतिरिक्त आयुक्त के साथ-साथ उपायुक्त/सहायक आयुक्त भी प्रत्येक सोमवार को किसी भी क्षेत्रीय कार्यालय में जन संवाद बैठक में व्यक्तिगत रूप से जाएंगे। इस आदेश का तत्काल क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

दूध में मिलावट करने वालों पर लगाया जाएगा मकोका?

महाराष्ट्र सरकार करेगी कानून में बड़ा बदलाव!

मुंबई (नि.स.)। दूध और इसी तरह के खाद्य उत्पादों में मिलावट एक बहुत गंभीर मामला है। इससे लोगों की जान जोखिम में पड़ जाती है। इसे सहन नहीं किया जाएगा। दूध और इसी तरह के खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वालों के खिलाफ मकोका के तहत सख्त कार्रवाई करने के लिए मौजूदा कानून में आवश्यक संशोधन किए जाएंगे। उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने बैठक में निर्देश दिया कि इस संबंध में एक प्रस्ताव मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

राज्य में अनेक स्थानों पर एनालॉग पनीर के नाम से एनालॉग चीज की बिक्री के संबंध में विधानसभा में चर्चा के दौरान दिए गए आश्वासन के अनुसार, साथ ही सोलापुर जिले के पंढरपुर तालुका के भोसे में उजागर हुई दूध में मिलावट के संबंध में विधान भवन के समिति कक्ष में उपमुख्यमंत्री अजीत पवार की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। इससे पहले विधान सभा में घोषणा की गई थी कि जल्द ही एक कानून बनाया जाएगा जिसके तहत दूध में मिलावट करने पर तीन साल तक की जेल की सजा होगी। वर्तमान में दूध में मिलावट करने वालों को छह महीने की जेल की सजा दी जाती है। चूंकि सजा छह महीने की है, इसलिए इस मामले में जमानत तुरंत दी जाती है। यदि यह सजा तीन वर्ष तक बढ़ा दी जाती है तो आरोपी को जमानत नहीं मिल सकेगी। इसलिए तीन साल के प्रावधान वाले कानून की मांग की गई।

अज्ञात कार चालक ने राहगीर को मारी जोरदार टक्कर

उल्हासनगर (नि.स.)। सड़क पर जा रहे एक शख्स को अज्ञात कार चालक ने तेज रफ्तार और लापरवाही से कार चलाते हुए जोरदार टक्कर मार दिया जिससे वो गंभीर रूप से घायल हो गया। मिली जानकारी के अनुसार कल्याण तालुका के नेवाली नाका परिसर में रहने वाले रामचंद्र शिवराम भागणे (38) ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ हिल लाइन पुलिस थाना में शिकायत दर्ज करवाया है। अपनी शिकायत में उन्होंने पुलिस को बताया कि 25 मार्च को रात पौने ग्यारह बजे उनके चचेरे भाई सुरेश मुकुंद भागणे नेवाली नाका परिसर में कपड़े की दुकान पर काम करके वापस घर आ रहा था। नेवाली नाका में कटाई नाका से बदलापुर जाने वाली सड़क पर अज्ञात कार चालक ने तेज रफ्तार और लापरवाही से कार चलाते हुए उनके भाई सुरेश को जोरदार टक्कर मार दिया जिससे वो गंभीर रूप से घायल हो गया। बहरहाल पुलिस नायक सोनवणे मामले की जाँच कर रहे हैं

सेंचुरी रेयान कंपनी ने 100 क्षय रोगियों को लिया गोद

उल्हासनगर मनपा आयुक्त ने किया सम्मानित

उल्हासनगर (नि.स.)। उल्हासनगर महानगरपालिका की प्रशासक/आयुक्त मनीषा आव्हाले ने सामाजिक प्रतिबद्धता कायम रखते हुए उल्हासनगर शहर के 100 क्षय रोगियों को गोद लेने पर सेंचुरी रेयान कंपनी के जनसंपर्क अधिकारी मेहुल लालका को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया है। केंद्र सरकार के मार्गदर्शन के आधार पर, उल्हासनगर महानगरपालिका ने मनपा आयुक्त मनीषा आव्हाले के मार्गदर्शन में विश्व क्षय रोग दिवस के अवसर पर उल्हासनगर मनपा मुख्यालय में राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम का आयोजन किया। हर साल 24 मार्च को उल्हासनगर मनपा रंगोली प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता का आयोजन करता है और निक्षय मित्र से तपेदिक रोगियों को पौष्टिक भोजन प्रदान करता है। इसके अलावा निक्षय पोषण योजना के तहत सरकार 1000 रुपये प्रति बच्चा प्रति बच्चा प्रदान कर रही है। उपचाराधीन तपेदिक रोगियों के बैंक खातों में 1000 रुपये जमा किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्षय रोगियों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री क्षय रोग मुक्त भारत पहल का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

इस पहल के तहत औद्योगिक समूहों, सामाजिक संगठनों और दानदाताओं से अतिरिक्त पोषण आहार, नैदानिक सहायता, व्यावसायिक सहायता आदि के रूप में सहायता उपलब्ध कराने की अपील की गई। इसी क्रम में शहाड स्थित ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड यूनिट सेंचुरी रेयान कंपनी ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को कायम रखते हुए पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी 100 क्षय रोगियों को गोद लेकर उन्हें पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया है। इसके लिए उल्हासनगर महानगरपालिका की प्रशासक/आयुक्त मनीषा आव्हाले ने सेंचुरी रेयान कंपनी के जनसंपर्क अधिकारी मेहुल लालका को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर विनोद केणे, ओम साई चैरिटेबल ट्रस्ट, आर.के.टी. कॉलेज ने एक प्रकाशित पत्रक के माध्यम से यह भी बताया है कि उन्होंने तपेदिक रोगियों की मदद की है।

केडीएमसी के विभिन्न प्रभागों में बकाया राशि के चलते संपत्ति सील करने की कार्रवाई

कल्याण (नि.स.)। कल्याण-डोंबिवली महानगर पालिका (केडीएमसी) की प्रशासक डॉ. इंदु रानी जाखड़ के निर्देशानुसार गुरुवार को मनपा के विभिन्न प्रभागों में बकाया राशि के चलते कई संपत्तियों को सील करने का व्यापक अभियान चलाया गया। संपत्ति कर निर्धारण एवं संग्रहण विभाग की उपायुक्त स्वाति देशपांडे-कुलकर्णी ने व्यक्तिगत निरीक्षण किया और उनकी उपस्थिति में 1/अ प्रभाग के सहायक आयुक्त प्रमोद पाटिल ने 37,93,893 रुपया बकाया एसबीआई बैंक के एटीएम को सील करने की कार्रवाई की गई। इसके अलावा, नांदप रोड, टिटवाला स्थित जी.आर. पाटिल स्कूल पर मनपा का 1,29,75,685 रुपए बकाया होने पर स्कूल के 2 कार्यालयों को सील करने की कार्रवाई की गई।

4/जे प्रभाग में सहायक आयुक्त सचिन तामखेड़े ने शक्तिधाम स्थित डेवलपर का ऑफिस 93,63,847 रुपए बकाया होने के कारण बकाया सीज करने की कार्रवाई की गई। इसके अलावा के.एस.ए. डेवलपर का संपत्ति 3,32,651 रुपया संपत्ति कर के मद में बकाया था, मालमत्ता क्रमांक बी 02002417600 को सील करने की कार्रवाई की गई। इसी प्रकार 7/ह प्रभाग में सहायक आयुक्त राजेश सावंत ने डोंबिवली (पश्चिम) महाराष्ट्र नगर में डेक्लपर किरतकर पर 35 लाख रुपये बकाया होने के चलते कार्यालय को सील करने की कार्रवाई की गई। इसके अलावा वोरा हाइट्स में संपत्ति संख्या एच 12023294900 को 29,237 रुपये की बकाया राशि के लिए सील कर दिया गया। इसी प्रकार 9/आय प्रभाग के सहायक आयुक्त भरत पवार ने मलंग रोड स्थित इसार पेट्रोल पंप का 3,15,000 रुपए की बकाया राशि होने के कारण उसे सील करने की कार्रवाई की।

उल्हासनगर (नि.स.)। उल्हासनगर के जाने-माने भवन निर्माता राजेश इदनानी (शेरा) की सुपुत्री याशिका का शुभ विवाह श्रीमती व श्री मेनका दिलीप रामत्री के सुपुत्र रोहित के संग बुधवार 26 मार्च को संपन्न हुआ। इस अवसर पर वर-वधु को शुभकामनाएं देने सुनील सिंह कलवा, किरण सुनील सिंह, कृष्णा लालवानी आदि गणमान्य उपस्थित थे।

दिव्यांग विद्यार्थियों का रोजगार मार्गदर्शन

भिवंडी (नि.स.)। भिवंडी के श्री भैरव सेवा समिती द्वारा संचालित तालुका के सरवली गांव स्थित श्री नाकोडा कर्ण बधिर विद्यालय में अमेजॉन कंपनी द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए रोजगार मार्गदर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 90 से 100 विद्यार्थी एवं उनके माता-पिता मौजूद थे। इसमें अमेजॉन कंपनी की कीर्ति भागवत एवं विशाल पाटील द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों के रोजगार के लिए विस्तृत मार्गदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में देवा ग्रुप के सचिव तानाजी मोरे एवं उनके कार्यकर्ता उपस्थित थे। श्री नाकोडा कर्ण बधिर विद्यालय दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति सहजभाव दिखाते हुए रोजगार का अवसर प्रदान करवाती है, जिसके लिए उन्होंने संस्था का अभिनंदन किया। दिव्यांग विद्यार्थीयों के पुनर्वसन हेतु जानकारी देते हुए अमेजॉन कंपनी दिव्यांग विद्यार्थियों को रोजगार का अवसर प्रदान कर रही है। स्कूल की मुख्याध्यापिका अश्विनी डुंगे ने कहा कि इस अवसर का सभी को लाभ लेना चाहिए।

'दिव्यांगजनों के लिए विशेष दिवस' पर दिव्यांगजन रेलवे कर्मचारी सम्मानित

महाप्रबंधक द्वारा दिव्यांगजन कर्मचारियों-कर्मचारियों के दिव्यांगजन बच्चों को विशेष दिव्यांग अनुकूल उपकरण भेंट

मुंबई (नि.स.)। मध्य रेल के महाप्रबंधक धर्मवीर मीना ने दिनांक 26 मार्च को मुंबई के सीएसएमटी सभागार में केंद्रीय कर्मचारी लाभ निधि (सीएसबीएफ) के तत्वावधान में मध्य रेल के कार्मिक विभाग द्वारा आयोजित एक समारोह में 'दिव्यांगजनों के लिए विशेष दिवस' के भाग के रूप में 11 दिव्यांगजन रेलवे कर्मचारियों को रोल मॉडल पुरस्कार से सम्मानित किया। दिव्यांगजनों को उनकी विकलांगता के बावजूद उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने और दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण स्थापित करने के लिए ये पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह के मुख्य अतिथि और महाप्रबंधक श्री मीना ने 7 दिव्यांगजन रेलवे कर्मचारियों को विभिन्न दिव्यांग अनुकूल उपकरण भी भेंट किए, जिनमें 4 कर्मचारियों को लैपटॉप (विशेष उपयोगकर्ता अनुकूल सॉफ्टवेयर के साथ), दिया गया, शेष 3 कर्मचारियों में से एक को स्मार्टफोन, एक को 1 जोड़ी स्मार्ट एआई चश्मा और एक को 1 वॉकिंग स्टिक प्रदान किया गया।

महाप्रबंधक ने रेलवे कर्मचारियों के दो दिव्यांगजन बच्चों को टखने और पैरों के लिए ऑर्थोसिस और स्टेटिक साइकिल भी भेंट की। इस अवसर पर बोलते हुए श्री मीना ने कहा कि मध्य रेल में 1253 दिव्यांगजन कर्मचारी कार्यरत हैं और उन्हें आवश्यक उपकरण प्रदान करके सशक्त बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं, ताकि उनकी क्षमता बढ़े और उनके दैनिक कार्यकलापों को आसान बनाया जा सके, जिसमें उनके कार्यस्थल पर विशेष सुविधाएं प्रदान करना भी शामिल है। इससे पहले श्री मीना ने पारंपरिक तरीके से दीप प्रज्वलित कर समारोह की शुभ शुरुआत की। प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी एवं अध्यक्ष, सीएसबीएफ पी.पी.पांडे ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत पौधे भेंट कर किया और स्वागत भाषण दिया। वरिष्ठ अधिकारियों के प्रोत्साहन भरे शब्दों और दिव्यांगजन कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए मध्य रेल की पहल को जारी रखने की नई प्रतिबद्धता के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। समारोह में अपर महाप्रबंधक प्रतीक गोस्वामी, अन्य विभागों के विभागाध्यक्ष, मध्य रेल के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे।

संपादकीय

मणिपुर में टकराव के नए कारक हो रहे पैदा

मणिपुर पहले ही जातीय टकराव और हिंसा के दौर में झुलस रहा है और अब तक वहां शांति के लिए की गई तमाम कवायदों का कोई ठोस हासिल सामने नहीं आया है। करीब पौने दो वर्ष पहले वहां शुरू हुई हिंसा और उसके बाद अराजकता का माहौल आज भी कमोबेश जारी है और उसके हल का रास्ता सरकार नहीं निकाल सकी है। मणिपुर में लगातार जारी अशांति के मुख्य कारणों को संबोधित करके जहां उसका कोई समाधान निकालने के लिए सभी स्तरों पर हर संभव उपाय किए जाने चाहिए थे, वहां हालत यह है कि अब राज्य में टकराव के नए कारक पैदा हो रहे हैं, नए क्षेत्रों में हिंसा का विस्तार हो रहा है और उससे हालात और ज्यादा बिगड़ने की आशंका खड़ी हो रही है।सवाल है कि केंद्र से लेकर राज्य तक का समूचा सरकारी तंत्र वहां के ज्यादातर इलाकों में पसरी अराजकता की स्थिति को संभालने और शांति कायम करने के प्रयासों में किन वजहों से नाकाम साबित हुआ है। इसका कारण सिर्फ हालात की जटिलता है या समस्या का हल निकालने के प्रति दूरदर्शिता की कमी और उदासीनता आखिर क्या वजह है कि मणिपुर में मैतेई और कुकी-जो के अलावा दूसरी जनजातियां भी अलग मुद्दों पर आमने-सामने खड़ी हो रही हैंगौरतलब है कि राज्य के अशांत चूड़ाचांदपुर जिले में कुछ दिन पहले हमार समुदाय के एक नेता पर हमला होने के बाद जोमी समुदाय के साथ हमार समुदाय के लोगों की झड़पें शुरू हो गई थीं। हालांकि इसके बाद हमार और जोमी समुदायों के शीर्ष निकायों ने पहल की और उसके बाद दोनों पक्षों के बीच शांति के लिए समझौता हुआ। मगर यह अफसोसनाक है कि उस समझौते पर कुछ देर अमल करना भी जरूरी नहीं समझा गया और दोनों समुदायों के बीच फिर हिंसा होने लगीं, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई।इस बीच जिले के उच्च अधिकारियों और खुद कुकी-जो समुदाय के विधायकों ने शांति के लिए अपील की। मगर इन सबका कोई असर नहीं पड़ा। सवाल है कि हिंसक टकराव में शामिल दोनों पक्षों के बरक्स सरकारी तंत्र को क्या इस बात की आशंका नहीं थी कि वहां जैसा माहौल अभी बना हुआ है, उसमें एक मामूली-सी चिंगारी भी फिर से हिंसा की आग को भड़का दे सकती हैहिंसा और अराजकता को पूरी तरह रोकने और खत्म करने के प्रति सरकार की उदासीनता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक छोटे राज्य में हिंसा की शुरूआत के अब दो वर्ष होने जा रहे हैं और आज भी मुख्य समस्या के हल का कोई रास्ता सामने नजर नहीं आ रहा है। निश्चित रूप से यह स्थिति टकराव और हिंसा में शामिल समुदायों के बीच असंतोष के कायम रहने का नतीजा है, लेकिन समस्या का हल निकालने से लेकर हिंसा पर काबू पाने के सभी अधिकार हाथ में होने के बावजूद सरकार और उसका समूचा तंत्र इस मसले पर किन वजहों से पूरी तरह नाकाम दिखता हैमणिपुर में अब राष्ट्रपति शासन लागू है। मैतेई समुदाय को जनजातीय दर्जा देने के मसले पर मैतेई और कुकी समुदायों के बीच शुरू हुई हिंसा पर केंद्र और राज्य सरकार की ओर से उठाए गए तमाम प्रयासों और दावों के बावजूद अब तक पूरी तरह काबू नहीं पाया जा सका है। अब अलग मुद्दों के साथ नए समुदायों के बीच जिस तरह का टकराव खड़ा हो रहा है, अगर समय रहते उसे थामने के लिए ईमानदार इच्छाशक्ति के साथ काम नहीं किया गया तो इसके नतीजों का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है।

संपादक,टीकम लालवानी

जब हम लोग जियोग्राफी और हिस्ट्री की पढ़ाई करते थे। वर्ल्ड ट्रेड के शुरुआती सबक सिखते थे तब स्वेज नहर के बारे में सुनते थे। इससे जुड़ी क्राइसिस के बारे में सुनते थे। 32 किलोमीटर के उस संकड़े रास्ते के बारे में सुनते थे जिस पर कोई आफत आती थी तो एशिया, अफ्रीका और यूरोप के बीच व्यापार की लागत बढ़ जाती थी। भारत की बात करें तो हमारा 20 से 25 प्रतिशत का वैश्विक व्यापार यही से होकर गुजरता है। भारत के लिए ये रास्ता उसका एनर्जी कॉरिडोर भी है। यही से उसका 60 से 65 प्रतिशत क्रूड आयल इंपोर्ट होता है। ये स्वेज कनाल जिस रेड सी को मेडिटेरिनियन सी से कनेक्ट करता है उस रेड सी की क्राइसिल से दुनिया हूतियों के हमलों से कई बार रूबरू हो चुकी है।

छोड़ आए हम वो गलियां...8 देशों के साथ मिलकर मोदी अब क्या ऐसा करने जा रहे हैं

(अभिनय आकाश)

वर्तमान समय में भारत और दुनिया के लिए स्वेज कनाल को बायपास कर एक इकोनॉमिकली सस्ते रास्ते को डेवलप करना सबसे बड़ी जरूरत है और इसी जरूरत को पूरा करने के लिए आज से दो साल पहले भारत सहित आठ देशों ने इंडिया मीडिल ईस्ट इकोनॉमिक कॉरिडोर को डेवलप करने का ऐलान किया।जब हम लोग जियोग्राफी और हिस्ट्री की पढ़ाई करते थे। वर्ल्ड ट्रेड के शुरुआती सबक सिखते थे तब स्वेज नहर के बारे में सुनते थे। इससे जुड़ी क्राइसिस के बारे में सुनते थे। 32 किलोमीटर के उस संकड़े रास्ते के बारे में सुनते थे जिस पर कोई आफत आती थी तो एशिया, अफ्रीका और यूरोप के बीच व्यापार की लागत बढ़ जाती थी। भारत की बात करें तो हमारा 20 से 25 प्रतिशत का वैश्विक व्यापार यही से होकर गुजरता है। भारत के लिए ये रास्ता उसका एनर्जी कॉरिडोर भी है। यही से उसका 60 से 65 प्रतिशत क्रूड आयल इंपोर्ट होता है। ये स्वेज कनाल जिस रेड सी को मेडिटेरेनियन सी से कनेक्ट करता है उस रेड सी की क्राइसिल से दुनिया हूतियों के हमलों से कई बार रूबरू हो चुकी है। इस वजह से इस रूट से गुजरने वाले सभी शिपमेंट को घूमकर साउथ अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप से होकर यूरोप तक जाना पड़ता है। जिस वजह से हर राउंड में एक मिलियन का एक्सट्रा फ्यूल खपत होता है व शिपमेंट की डिलीवरी में भी देरी हो जाती है। वर्तमान समय में भारत और दुनिया के लिए स्वेज कनाल को बायपास कर एक इकोनॉमिकली सस्ते रास्ते को डेवलप करना सबसे बड़ी जरूरत है और इसी जरूरत को पूरा करने के लिए आज से दो साल पहले भारत सहित आठ देशों ने इंडिया मीडिल ईस्ट इकोनॉमिक कॉरिडोर को डेवलप करने का ऐलान किया।

ट्रंप ने बताया इतिहास का सबसे महान व्यापार मार्ग - भारत का वो हथियार जिसे चीन का मुकाबला करने के लिए साल 2023 में जी20 की प्रेसिडेंसी के दौरान शुरू किया गया था। सितंबर 2023 में नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन में विश्व नेताओं ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) की योजना का अनावरण किया था। सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, भारत, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), फ्रांस, जर्मनी, इटली और संयुक्त राज्य अमेरिका ने परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता जताते हुए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस परियोजना को चीन की विशाल बेल्ट एंड रोड पहल के लिए एक रणनीतिक प्रतिकार के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने फरवरी में नरेंद्र मोदी की वाशिंगटन यात्रा के दौरान आईएमईसी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई थी, और इसे इतिहास का सबसे महान व्यापार मार्ग कहा था। लेकिन इजरायल और हमास की युद्ध की शुरुआत के बाद से ही भारत का ये हथियार थोड़ा सा कमजोर पड़ गया। यानी इस पर काम आगे नहीं बढ़ पाया। ऐसे में आइए जानते हैं कि आईएईसी क्या है और किस तरह से इस कॉरिडोर के माध्यम से हम चीन को काउंटर कर सकते हैं।

आईएमईसी कॉरिडोर क्या है - भारत, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), फ्रांस, जर्मनी, इटली और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रस्तावित आईएमईसी रेलमार्ग, जहाज से रेल (सड़क और समुद्र) और सड़क परिवहन मार्गों का एक नेटवर्क है जो दो गलियारों में फैला हुआ है, यानी पूर्वी गलियारा - भारत को खाड़ी से जोड़ता है और उत्तरी गलियारा - खाड़ी को यूरोप से जोड़ता है। प्रस्ताव के अनुसार, आईएमईसी भारत से संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, जॉर्डन, इजरायल और यूरोप तक तथा वापस वस्तुओं और सेवाओं के परिवहन को सक्षम बनाएगा। इसमें शामिल नेताओं ने कहा कि एक बार पूरा हो जाने पर इससे कार्यकुशलता में सुधार आएगा, लागत में कमी आएगी, आर्थिक एकता बढ़ेगी, रोजगार सृजन होगा तथा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आएगी। जैसा कि विदेश मामलों के विशेषज्ञ रोबिंदर सचदेव ने साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट को बताया, एक बार बन जाने के बाद, आईएमईसी परिवहन समय में 40 प्रतिशत तक की कमी लाएगा, जिससे भारत को यूरोपीय बाजारों तक अधिक लागत-प्रभावी पहुंच मिलेगी। नई दिल्ली में ल20 शिखर सम्मेलन में घोषणा किए जाने पर, पीएम मोदी ने आईएमईसी को सहयोग, नवाचार और साझा प्रगति का प्रतीक कहा। इस बीच, तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने इसे वास्तव में बड़ी बात करार दिया।

ग्लोबल पॉलिटिक्स का भी है अहम रोल - यह गलियारा सिर्फ़ आर्थिक एकीकरण या जैसा कि कुछ विशेषज्ञ भू-अर्थशास्त्र के बारे में कहते हैं, के बारे में नहीं है। इसके व्यापक भू-राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। कई लोगों का मानना है कि आईएमईसी चीन की बेल्ट एंड रोड को काउंटर करने का एक हथियार है क्योंकि खाड़ी और पश्चिम एशिया में बीजिंग का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार आईएमईसी परियोजना को चीन की बीआरआई के विकल्प के रूप में देखा जा सकता है, जिसका नेतृत्व भारत और अमेरिका कर रहे हैं। जानकार बताते हैं कि यह योजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का एक महत्वपूर्ण जवाब हो सकती है। अगर इसे अंतिम रूप दिया जाता है, तो यह एक गेम चेंजर साबित होगा जो भारत और पश्चिम एशिया के बीच संपर्क को मजबूत करेगा और इसका उद्देश्य बीआरआई का मुकाबला करना होगा।

कहां फंस रहा है पेंच -हालाँकि, आईएमईसी के कई फ़ायदों के बावजूद, ऐसी चुनौतियाँ हैं जो इस गलियारे को हकीकत बनने से रोक सकती हैं। सबसे पहले, भू-राजनीतिक तनाव यानी इज़राइल-गाजा युद्ध आईएमईसी की प्रगति को धीमा कर सकता है। इज़राइल के लिए, गाजा में एक स्थायी समझौता निकट भविष्य में आईएमईसी से ऊपर एक नीतिगत प्राथमिकता बनी रहेगी। इससे सऊदी-इज़राइल सामान्यीकरण की संभावनाओं को नुकसान पहुँचेगा, जिसे कुछ लोग आईएमईसी के संचालन के लिए एक आवश्यक शर्त मानते हैं। एक तथ्य यह भी है कि चूंकि इजरायल गाजा पर बमबारी जारी रखे हुए है, इसलिए कई अरब देशों के लिए यहूदी राष्ट्र के साथ एक ही मेज पर बैठना मुश्किल हो जाएगा, क्षेत्रीय एकीकरण परियोजनाओं की योजना बनाना तो दूर की बात है। वित्तपोषण का मुद्दा भी है। वर्तमान में सऊदी अरब ने आईएमईसी के लिए 20 बिलियन डॉलर देने का वादा किया है। हालाँकि, यह 2027 तक परियोजना के लिए ल7 द्वारा मांगे गए 600 बिलियन डॉलर का एक छोटा सा अंश है। इसके अलावा, किसी भी सदस्य देश के पास आईएमईसी के लिए कोई वित्तीय दायित्व नहीं है, जिससे वित्तपोषण का अधिकांश दृष्टिकोण अनिश्चित है। कई भू-राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि द्वल्ध्ष्ट में मिस्र, ओमान और तुर्की जैसे क्षेत्रीय खिलाड़ियों की अनुपस्थिति समस्याजनक हो सकती है।

इन सब से भारत को क्या फायदा होगा - लेकिन कई मुद्दों के बावजूद, विश्लेषकों का मानना है कि आईएमईसी के चालू होने के बाद यह कई मायनों में भारत के लिए बहुत फ़ायदेमंद होगा। रोबिंदर सचदेव ने साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट को बताया कि आईएमईसी भारत की कनेक्टिविटी, आर्थिक अवसरों और वैश्विक स्थिति को बढ़ाता है, साथ ही जी7 और क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ साझेदारी में चीन की [बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव] के लिए एक बहुपक्षीय प्रतिसंतुलन के रूप में भी काम करता है। इससे नई दिल्ली को पश्चिमी दुनिया, खास तौर पर यूरोप के साथ संबंधों को मजबूत करने में भी मदद मिलेगी। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी अप्रत्याशितता से विश्व व्यवस्था को बदल रहे हैं।

संघ विरोधियों को नरेन्द्र मोदी का उत्तर

(मृत्युंजय दीक्षित)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर केवल तुषार गांधी ही हमला नहीं कर रहे हैं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पूरे इंडी गठबंधन के नेता किसी न किसी बहाने संघ पर हमलवार रहे है क्योंकि संघ निरंतर हिंदू समाज को एकरस करने के लिए कार्य कर रहा है जिससे इनकी जातिवादी- क्षेत्रवादी- भाषावादी और परिवारवादी राजनीति का भविष्य दांव पर लग गया है।अपने जन्मकाल से ही अविचलित रूप से राष्ट्र सेवा करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब अपनी शताब्दी तक पहुंच गया है। माँ भारती और हिन्दू समाज की इस अहर्निश सेवा यात्रा में संघ पर नियमित रूप से राजनैतिक हमले भी होते रहे किन्तु संघ न डरा न डिगा वरन सतत संकल्पवान होकर भारत माँ की सेवा में तत्पर रहा। संभवतः संघ का यह निष्कंप समर्पण ही उसके विरोधियों को भयग्रस्त करता है और उन्हें तर्कहीन बातें कहने को बाध्य करता है। संघ पर हमले का एक उदहारण महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी के बयान के रूप में सामने आया है। 12 मार्च 2025 को केरल के तिरुअनंतपुरम में गांधीवादी नेता पी गोपीनाथन नायर की प्रतिमा का अनावरण करते हुए तुषार गांधी ने कहा, राष्ट्र की आत्मा कैंसर से पीड़ित है और संघ परिवार इसे फैला रहा है। यही नहीं उन्होंने भाजपा और संघ को केरल में प्रवेश करने वाला एक कपटी शत्रु बताया। तुषार ने संघ को जहर भी कहा। इस वक्तव्य के बाद से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के कार्यकर्ता केरल में तुषार गांधी से मांफी मांगने व उनकी गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। इसके प्रति उत्तर में तुषार गांधी ने कहा कि वह अपनी बातों से पीछे हटने या उनके लिए माफी मांगने में विश्वास नहीं करते। वह संघ के प्रति नफरत से इस सीमा तक भरे हुए हैं कि कहते हैं कि अब हमारा एक साझा दुश्मन है और वह है संघ। भाजपा ने तुषार गांधी पर पलटवार करते हुए कहा कि तुषार गांधी कई वर्षा से महात्मा गांधी के नाम को आर्थिक लाभ के लिए भुनाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी संघ को कैंसर बता रहे जबकि स्वयं महात्मा गांधी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविर में गये थे और अपने अनुभव साझा करते हुए लिखा था कि, कुछ वर्ष पहले जब संघ के संस्थापक जीवित थे आपके शिविर में गया था। वहां पर आपके अनुशासन, अस्पृश्यता का पूर्णरूप से अभाव और कठोर सादगीपूर्ण जीवन देखकर काफी प्रभावित हुआ। सेवा और स्वार्थ त्याग के उच्च आदर्श से प्रेरित कोई भी संगठन दिन प्रतिदिन अधिक शक्तिवान हुए बिना नही रहेगा।

किन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर केवल तुषार गांधी ही हमला नहीं कर रहे हैं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पूरे इंडी गठबंधन के नेता किसी न किसी बहाने संघ पर हमलवार रहे है क्योंकि संघ निरंतर हिंदू समाज को एकरस करने के लिए कार्य कर रहा है जिससे इनकी जातिवादी- क्षेत्रवादी- भाषावादी और परिवारवादी राजनीति का भविष्य दांव पर लग गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष के पूरे प्रपंच को एक बार में ही ध्वस्त कर दिया है और पूरे विश्व को संघ शक्ति का परिचय दे दिया है। अमेरिकी पॉडकास्टर लेक्स फ्रिडमैन को दिये एक लंबे साक्षात्कार में संघ के समर्पित स्वयंसेवक नरेन्द्र मोदी ने संघ के विरोधियों का मुंह बंद करते हुए संघ के विरुद्ध जो नफरत भरा वातावरण तैयार किया जा रहा था उसे ध्वस्त करने का सार्थक प्रयास किया है। प्रधानमंत्री मोदी का यह पॉडकास्ट पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बिंदु बन चुका है। इस पॉडकास्ट को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपने निजी सोशल मीडिया अकाउंट पर भी साझा किया है जिसे करोड़ों लोग देख रहे हैं। पॉडकास्ट हिंदी तथा अंग्रेजी सहित कई प्रमुख भाषाओं में सुना जा सकता है।

बिन्दु मिलाओ और कलर करो...

वर्ग पहेली 5537

1	2		3	4		■	5
6		■	7		■	8	
	■	9			■	10	
11	12	■	■	■	13		
14		15	16	■		■	
■	17			■	18		
19	■	■	20	21	■	■	
22		■	23				

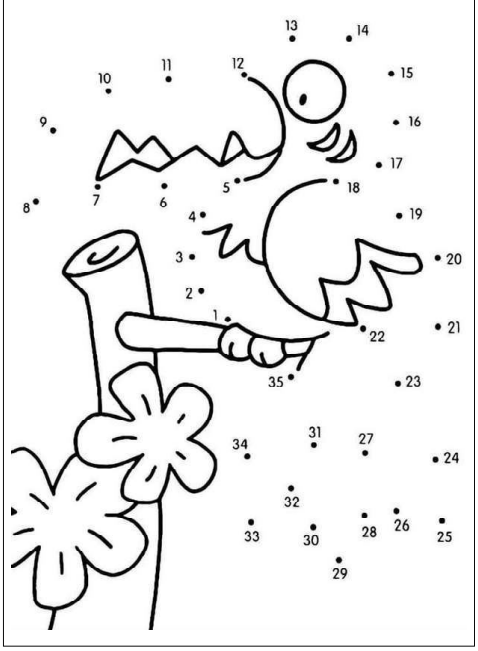

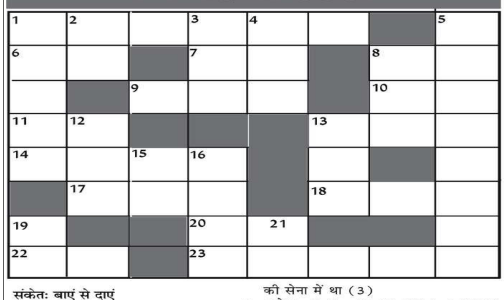

संकेतः बाएं से दाएं

1. 4 जून 1959 को रिलायंस समूह के अध्यक्ष और इस प्रसिद्ध व्यवसायी का जन्म हुआ था (6)
6. मुस्लिम रीति से निकाह करवाने वाला, मुसिफ, न्यायकर्ता (2)
7. पंजाबी में बात को यह कहते है (2)
8. संसार, दुनिया, जगत (4)
9. औषधि का बना लड्डू (2)
10. उपस्थित करना, ले आना (2)
11. वह तारा जो सूर्य की परिक्रमा करता हो, सौरमंडल के पिंड (2)
13. हलफ, कसम, सौगंध (3)
14. गले में पहनने का हार (4)
17. नलाकार, अस्थि, कंबु (3)
18. इस वृक्ष के छोटे-छोटे फलों से मदिरा निर्माण भी होता है (3)
20. मद्यकुंभ, इनामल (2)
22. फोटो, चित्र, फोटोग्राफ (3)
23. अभिप्राय, प्रयोजन (4)

ऊपर से नीचे

1. दुर्भिक्षग्रस्त, जिस क्षेत्र में अकाल पड़ा हो (5)
2. मेरा या मेरी, वैयक्तिक, आत्मीय (2)
3. रामायण के अनुसार बालि का पुत्र जो राम की सेना में था (3)
4. छोटा बच्चा, मास्टर सूरज, जयमाला जरूश्रीटी, जगदीप आदि अभिनीत और आदर्श द्वारा निर्देशित फिल्म (1969) (3)
5. प्रसिद्ध भारतीय शतरंज खिलाड़ी जिसमें 5 बार विश्व शतरंज प्रतियोगिता जीती है (8)
8. आर्तनाद, रूदन, करूण क्रंदन (3)
12. गुणनकर्म, गड़ाई, वध (3)
15. स्थिति, दशा, अवस्था (2)
16. दस्तावेज, लिखित, कलमबंदी, तहरीरी, लिपिबद्ध (3)
19. देवमूर्ति, मंदिर मूर्ति (2)
21. ख्याति, प्रसिद्धि, शोहरत (2)

वर्ग पहेली 5536 का हल

इं	दौ	र	■	सु	क	रा	त
का	ल	म	■	ख	र	ह	रा
र	त	■	■	दा	दा	■	श
■	■	स	हा	य	ता	■	ना
■	अ	द	र	क	■	सो	■
बि	स	र	ना	■	त	मा	म
■	बा	■	■	मा	त	लि	■
■	ब	ह	री	न	■	या	दें

रास्ता खोजो

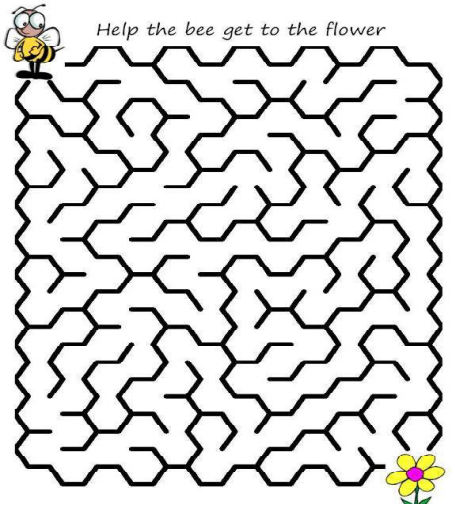

Konark
Enterprises Pvt. Ltd.
Reliance
AUTHORISED DEALER
Fully Computerised Weigh Bridge 50 TON
100% Quality & Quantity
Reliance Petrol Pump, Near Sai baba Mandir, Ambarnath

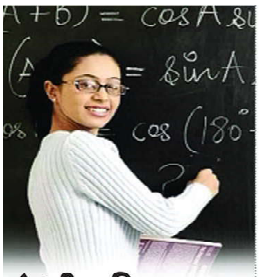

केंद्रीय विद्यालय में कैसे बनते हैं टीचर?

अगर आप भी केंद्रीय विद्यालय में टीचर बनने की सोच रहे हैं और आपको नहीं पता है कि केंद्रीय विद्यालय में टीचर कैसे बनते हैं तो आपको हम यहां पर बता रहे हैं कि कैसे केंद्रीय विद्यालय में टीचर बना जा सकता है।

बहुत से युवाओं का सपना होता है कि वे टीचर बनकर बच्चों को पढ़ाएं। अगर आप भी टीचर बनना चाहते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहते हैं तो केंद्रीय विद्यालय में टीचर बनकर आप अपना यह सपना पूरा कर सकते हैं। केंद्रीय विद्यालय में समय-समय पर टीचर के पद की वैकेंसी निकलती रहती हैं। केंद्रीय विद्यालय की वैकेंसी निकलते ही आपको अप्लाई करना होगा। अप्लाई करने के बाद रिटेन परीक्षा में उत्तीर्ण होकर इंटरव्यू क्लियर करना होगा। इंटरव्यू और मेडिकल के बाद आपको जॉइनिंग लेटर मिलेगा।

एजुकेशनल क्वालिफिकेशन

केंद्रीय विद्यालय में टीचर बनने के लिए अप्लाई करने वाले कैंडिडेट को किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से कम से कम 50% मार्क्स के साथ ग्रेजुएट होना जरुरी है। साथ ही हिंदी और अंग्रेजी दोनों का ज्ञान होना चाहिए। कैंडिडेट की मैक्सिमम उम्र 35 वर्ष होना चाहिए। इसके अलावा कैंडिडेट्स को बैचलर ऑफ़ एजुकेशन कोर्स किया होना चाहिए। साथ ही अभ्यर्थी को सीटेट की परीक्षा भी पास किए होना चाहिए।

क्या बीएड?

यह एक ग्रेजुएशन डिग्री प्रोग्राम है, जो आम तौर पर तीन से चार साल तक चलता है। इसमें छात्रों को स्कूलों में टीचर के रूप में काम करने के लिए ट्रेन किया जाता है। क्वश्वस्त्र में एडमिशन के लिए अभ्यर्थियों को ग्रेजुएट डिग्री कम से कम 50 परसेंट मार्क्स और कुछ सब्जेक्ट्स में 55 परसेंट मार्क्स के साथ पास करना ज़रूरी है।

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट एग्जाम

केवी का टीचर बनने के लिए छात्र का CTET एग्जाम पास करना जरुरी है। CTET एक परीक्षा होती है, जिसे पास करने के बाद आप केंद्र और राज्य स्तर के विद्यालयों में शिक्षक पद के लिए अप्लाई कर सकते हैं। CTET का आयोजन साल में दो बार होता है। इसमें दो पेपर होते हैं। पहला पेपर प्राइमरी एजुकेशन यानी 5वीं तक पढ़ाने के लिए अप्लाई करने वाले कैंडिडेट्स के लिए होता है। दूसरा पेपर सीनियर क्लासेज में पढ़ाने वाले कैंडिडेट्स के लिए होता है।

बीटेक के लिए ईई या ईसीई कौन बेहतर?

टेक्नोलॉजी एडवांसमेंट्स के साथ इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरों की मांग बढ़ रही है लेकिन बीटेक के लिए ईई या ईसीई कौन बेहतर है और क्या अंतर है?

अगर आप इंजीनियरिंग कोर्स को लेकर कन्फ्यूज हैं, तो हम आपकी उलझन थोड़ी दूर कर देते हैं। ये आर्टिकल इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग के बारे में है। जान लें- इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में क्या अंतर है? दोनों में कौन सी ब्रांच बेहतर है?

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग क्या है?

यह मुख्य रूप से उन उपकरणों, डिवाइस और सिस्टम स्टडी, डिजाइन एंड एप्लिकेशन से संबंधित है, जो बिजली, इलेक्ट्रॉनिक्स और विद्युत चुंबकत्व का उपयोग करते हैं। यह उन्हें इलेक्ट्रिकल उपकरण डिजाइन करने में मदद करता है, जैसे कि इलेक्ट्रिक मोटर, रडार और नेविगेशन सिस्टम, कम्युनिकेशन सिस्टम, बिजली उत्पादन उपकरण, ऑटोमोबाइल और विमान। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरों के पास नौकरी के बहुत से विकल्प हैं और उन्हें कई क्षेत्रों में काम मिल सकता है। वे कंट्रोल इंजीनियरिंग, प्रोजेक्ट इंजीनियरिंग, टेस्ट इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, टेली कम्युनिक्शन इंजीनियरिंग, डिजाइन इंजीनियरिंग, सिस्टम इंजीनियरिंग, एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग, रीन्युएबल एनर्जी सेक्टर, ऑटोमेशन, रोबोटिक्स में काम कर सकते हैं। भारत में एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर ग्रेजुएट की शुरुआती सैलरी औसत 4.5 लाख रुपये प्रति वर्ष है। यह इस बात पर निर्भर कर सकता है कि वे कहां काम करते हैं, उनके पास कितना अनुभव है, और वे किस उद्योग में हैं। शुरुआती वेतन अक्सर अच्छा होता है और अधिक अनुभव के साथ वे अधिक कमाते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग क्या है?

ये एक विविध इंजीनियरिंग क्षेत्र है जो इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम और संचार नेटवर्क को डिजाइन करने, विकसित करने और लागू करने पर केंद्रित है। इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग ग्राहक और परियोजना आवश्यकताओं की पहचान करते हैं, समाधान खोजते हैं, इलेक्ट्रॉनिक सर्किट और सिस्टम डिजाइन करते हैं, फर्मवेयर और एम्बेडेड सॉफ्टवेयर विकसित करते हैं, प्रोटोटाइप का परीक्षण करते हैं, और निर्माण की देखरेख करते हैं। वे अगली पीढ़ी के गैजेट और बुनियादी ढांचे का आविष्कार करने के लिए अत्याधिक उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स, सॉफ्टवेयर और संचार तकनीकों को एकीकृत करने का काम करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग एक बहुत ही बहुमुखी क्षेत्र है। ईसीई

इंजीनियरों को इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम और संचार बुनियादी ढांचे को विकसित करने वाले उद्योगों की एक विस्तृत श्रृंखला में रोजगार मिलता है। कुछ शीर्ष क्षेत्र हैं दूरसंचार, एयरोस्पेस, डिफेंस, मोटर व्हीकल, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, बिजली व्यवस्था और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग। भारत में एक इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियर के लिए औसत शुरुआती वेतन 4 लाख प्रति वर्ष है। EE की तरह, वेतन स्थान, अनुभव के वर्षों, कौशल और नियोक्ता के आधार पर अलग-अलग होता है।

EE और ECE में कौन सी इंजीनियरिंग ब्रांच बेहतर है?

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (EE) और इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग (ECE) दोनों शाखाएं समान रूप से अच्छी हैं। लेकिन, यह सब व्यक्ति की रुचि के क्षेत्र पर निर्भर करता है। मुझे लगता है कि छात्र को भविष्य के लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए। एक बार जब वह इसके बारे में सुनिश्चित हो जाता है, तो वह अपनी पसंद की स्ट्रीम चुन सकता है।

जल प्रबंधन की फील्ड में बनाएं शानदार करियर

अगर आप लीक से हटकर करियर बनाना चाहते हैं तो आपके लिए यह आर्टिकल जरूरी साबित हो सकता है। क्योंकि हम यहां पर आपको पानी से जुड़ी करियर के बारे में बता रहे हैं। आप भी एक वॉटर डिप्लोमैट के रूप में बढ़िया करियर बना सकते हैं। अगर आप इस फील्ड में करियर बनाते हैं तो आपको बढ़िया सैलरी भी मिलेगी।

पानी की कमी और खराब गुणवत्ता जैसी समस्याएं आज पूरी दुनिया में देखी जा रही हैं। ये समस्याएं एक राज्य या फिर एक देश तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक हैं। ऐसे में जल प्रबंधन के मुद्दों को सुलझाने के लिए वॉटर डिप्लोमैसी और डेवलपमेंट विशेषज्ञों की ज़रूरत है। दुनिया भर में कई देश अपने जल संसाधनों का प्रबंधन टिकाऊ तरीके से करने की चुनौती का सामना कर रहे हैं। अगर आप भी इस फील्ड में करियर बनाना चाहते हैं तो आपके भविष्य उज्जवल हो सकता है। क्योंकि इस फील्ड में अच्छी नौकरी के साथ अच्छी सैलरी भी मिलती है। ऐसे में आइए हम आपको बताते हैं कि इस फील्ड में करियर बनाकर आप कितनी सैलरी पा सकते हैं।
वॉटर डिप्लोमैसी और डेवलपमेंट में वेतन अच्छा होता है। हालांकि, यह कई बातों जैसे - अनुभव, शिक्षा, कार्यक्षेत्र और जिस संस्था में आप काम करते हैं, उस पर निर्भर करता है।

शुरुआती पद

शोध सहायक या जूनियर नीति विश्लेषक जैसे शुरुआती पदों पर सालाना वेतन 40,000 से 60,000 अमेरिकी डॉलर के बीच हो सकता है।

अनुभवी पेशेवर

अनुभवी पेशेवरों के लिए जिनके पास कई सालों का अनुभव और विशेष कौशल है। उन्हें वेतन 60,000 से 1,00,000 अमेरिकी डॉलर या उससे भी ज्यादा मिल सकता है।

वरिष्ठ पद

निदेशक या वरिष्ठ नीति सलाहकार जैसे वरिष्ठ पदों पर सालाना वेतन 1,00,000 से 1,50,000 अमेरिकी डॉलर के बीच होता है। सबसे ज्यादा वेतन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, सरकारी एजेंसियों या परामर्श फर्मों में मिलता है। इसके अलावा, जिन लोगों के पास मास्टर्स या पीएच.डी. जैसी उच्च शिक्षा है, उनके उच्च वेतन पाने और कैरियर में तेजी से तरक्की करने की संभावना अधिक होती है।

जल प्रबंधन में प्रमाणन कार्यक्रम

इसी दिशा में काम करते हुए जल प्रबंधन संस्थान भारतीय और विदेशी नागरिकों के लिए प्रमाणित जल लेखाकार /विशेषज्ञ बनने के लिए एक प्रमाणन कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है। इस कार्यक्रम में कई तरह के कोर्सेज पर ट्रेनिंग दिया जाएगा।

रूस की यूनिवर्सिटीज में पढ़ाई के लिए उपलब्ध हैं ये स्कॉलरशिप्स

भारतीय छात्रों के लिए रूस में पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप के कई अवसर मौजूद हैं इसकी जानकारी हम आपको यहां दे रहे हैं। हर साल रूसी सरकार विदेशी छात्रों के लिए राज्य से आर्थिक सहायता प्राप्त सीट्स ऑफर करती है।

रूस में अधिकतर विश्वविद्यालय सरकारी सहायता प्राप्त स्कॉलरशिप देती हैं और एकसमान आवेदन प्रक्रिया अपनाती हैं। कोई भी विदेशी छात्र रूस में यूनिफॉर्म स्टेट एग्जामिनेशन या एंट्रेंस एग्जाम पास करने के बाद स्कॉलरशिप के लिए उसी तरह आवेदन कर सकते हैं जिस तरह रूसी छात्र करते हैं। हर साल रूसी सरकार विदेशी छात्रों के लिए राज्य से आर्थिक सहायता प्राप्त सीट्स ऑफर करती है। 2022 में 15 हजार इस तरह की सीट्स दी गई थीं।

स्कॉलरशिप अमाउंट

सरकार से प्राप्त होने वाली स्कॉलरशिप में पूरे कोर्स की ट्यूशन फीस, मेंटनेंस अलाउंस और डोरमेटरी अलाउंस शामिल होता है। जो छात्र इन स्कॉलरशिप को प्राप्त करना चाहते हैं वो भारत में ऑथराइस्ड व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं और वहां उपलब्ध स्कॉलरशिप और कोर्स के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। पढ़ाई के लिए छात्र एक बार में 6 यूनिवर्सिटिज को चुन सकता है। लेकिन एक फेडरल क्षेत्र में 3 से ज्यादा नहीं चुन सकते जबकि मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग में दो से ज्यादा नहीं चुन सकते हैं। अपनी पसंद के अनुसार अपनी चॉइस भरें और इसके बाद अन्य को भरें और चयन प्रक्रिया में बुलावे का इंतजार करें। देश के आधार पर ऑपरेटर इंटरव्यू, टेस्ट और परीक्षा का शेड्यूल जारी कर सकते हैं इसकी जानकारी उनकी वेबसाइट या आपको ईमेल के जरिए मिल सकती है। जिन छात्रों को डिग्री के स्तर पर रूसी भाषा की जानकारी नहीं है उन्हें प्री पेरेटरी डिपार्टमेंट में एनरोल किया जाता है। उन्हें सामान्य शिक्षा के साथ एक साथ रूसी भाषा की पढ़ाई भी करनी पड़ती है।

- अगर आप कैंडिडेट्स की सूची में शामिल हो गए हैं तो अपने पास अतिरिक्त डॉक्यूमेंट्स तैयार रखें
- एमबीबीएस डॉक्टर का सर्टिफिकेट तैयार करवाना होगा जिसमें बताया गया होगा कि ऐसा कोई मेडिकल कारण नहीं जिसकी वजह से आपको रूसी यूनिवर्सिटिज में न चुना जाए। इसमें एचआईवी टेस्ट भी करवाना होगा।
- डॉक्यूमेंट्स की कॉपी (रूसी भाषा में ट्रांसलेटिड), ऑनलाइन इन्हे सबमिट करें और हार्ड कॉपी ऑपरेटर के पास जमा करें।
- अब यूनिवर्सिटी में अपने कन्फर्मेशन का इंतजार करें।

संसद में ओम बिरला ने पप्पू यादव की लगाई क्लास

कहा नियमों का पालन करें पप्पू यादव

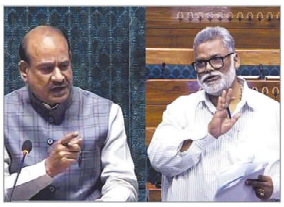

नईदिल्ली (एजेंसी)। एएनआई, नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरुवार को निर्दलीय नेता सांसद पप्पू यादव के व्यवहार पर चिंता जाहिर की। कार्यवाही के दौरान केंद्रीय मंत्री के कंधे पर हाथ रखने को लेकर पप्पू यादव को चेतावनी दी। दरअसल, पप्पू यादव ने सदन में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू के बगल में बैठे थे। वो मंत्री के साथ हंसी मजाक कर रहे थे बातचीत के दौरान उन्होंने नायडू के कंधों पर हाथ रखा था। सूत्रों ने बताया कि पप्पू यादव अपने संसदीय क्षेत्र में एक हवाई अड्डे के बारे में चर्चा कर रहे थे।

रूसी विदेश मंत्री बोले- पुतिन जल्द ही भारत जाएंगे, यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद यह पहली बार

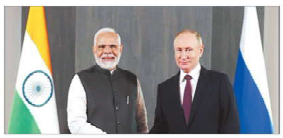

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस साल भारत आएंगे। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि राष्ट्रपति के विजिट के लिए तैयारियां की जा रही हैं। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि यह यात्रा किस महीने या तारीख को हो सकती है।

लावरोव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद रूस की अपनी पहली विदेश यात्रा की है। अब हमारी बारी है। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारतीय सरकार का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। रूसी विदेश मंत्री ने यह बयान 'रूस और भारत- एक नए द्विपक्षीय एजेंडे की ओर' समिट के दौरान दिया है। इस बैठक का आयोजन रूसी अंतरराष्ट्रीय मामलों की परिषद (आरआईएसी) ने किया।

गुजरात में 10 रुपए के लिए 40 बच्चों ने हाथ काटे

वीडियो गेम खेलकर 7वीं क्लास के बच्चे ने टास्क दिया, जिसके ज्यादा घाव, उसे इनाम

अमरेली (एजेंसी)। गुजरात में एक गांव के सरकारी स्कूल में 40 बच्चों ने शार्पनर से अपने हाथ काट लिए। यह सभी 5वीं से 8वीं क्लास के स्टूडेंट्स हैं। इन्हें स्कूल के ही 7वीं क्लास के एक बच्चे ने टास्क दिया था कि जिसके हाथ ज्यादा घाव होंगे, उसे 10 रुपए इनाम दिया जाएगा।

इस स्टूडेंट को वीडियो गेम में ब्लू व्हेल गेम खेलकर ऐसा टास्क देने का आइडिया आया था। पिछले 8-10 दिन से बच्चे अपने हाथ पर कट लगा रहे थे। बुधवार को एक बच्चे के हाथ में कट देखकर उसके पेरेंट्स ने स्कूल में जाकर इसकी शिकायत की, तब मामला उजागर हुआ।

10 बच्चों से शुरू हुआ खेल 40 तक पहुंचा- मामला अमरेली जिले में मोटा मुंजियासर गांव के प्राथमिक विद्यालय का है। स्कूल से मिली जानकारी के मुताबिक, कक्षा 7 के एक स्टूडेंट ने अपनी क्लास के अन्य स्टूडेंट्स को ब्लेड से हाथ काटने का टास्क दिया था। पहले उसकी क्लास के करीब 10 बच्चे इसमें शामिल हुए और फिर धीरे-धीरे कर पांचवीं से आठवीं क्लास तक के 40 बच्चे टास्क में शामिल हो गए।स्टूडेंट ने टास्क के दौरान शर्त रखी थी कि जिसके हाथ पर ज्यादा यह गहरे घाव होंगे, उसका ही टास्क पूरा माना जाएगा।टास्क पूरा करने वाले को 10 रुपए का इनाम दिया जाएगा। जो स्टूडेंट टास्क पूरा नहीं कर पाएगा तो उसे 5 रुपए देने होंगे।जांच में पता चला है कि टास्क देने वाला स्टूडेंट मोबाइल लेकर स्कूल आता है और घर पर अक्सर ऑनलाइन गेम खेलता है।अमरेली के एएसपी जयवीर गढ़वी ने स्कूल पहुंचकर अभिभावकों के बयान दर्ज किए।

शिक्षकों बोले- हमारी जिम्मेदारी नहीं- बवाल मचने पर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कहा कि यह अभिभावकों की ही गलती है। वे बच्चों को मोबाइल देखने देते हैं।यह भी ध्यान नहीं देते कि बच्चा मोबाइल पर कौन सा गेम खेल रहा है, या क्या देख रहा है।बच्चों को मोबाइल की लत से छुड़ाने की जिम्मेदारी अभिभावकों की है, शिक्षकों की नहीं।

यात्री के प्राइवेट पार्ट में मिला सोना

- एक्स-रे में दिखा 70 लाख का गोल्ड पेस्ट, मास्टरमाइंड को भी दबोचा

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर के इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक बार फिर गोल्ड तस्करी का मामला सामने आया है। करीब 70 लाख के गोल्ड पेस्ट को आरोपी यात्री के प्राइवेट पार्ट से निकाल किया गया है। डायरेक्टरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस (डीआरआई) की टीम ने गुरुवार (27 मार्च) सुबह आरोपी यात्री के साथ गोल्ड स्मगलिंग के मास्टरमाइंड को भी दबोचा है। सूत्रों के अनुसार एजेंसी के हाथ लगे मास्टरमाइंड तस्कर अजय फगोड़िया से पूछताछ में कई बड़े खुलासे होने की संभावना है। जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट बीते कुछ सालों में गोल्ड व ड्रग्स स्मगलरों का बड़ा पॉइंट बन गया है।

एयर अरेबिया की फ्लाइट पर थी नजर- डीआरआई के अधिकारियों के पास जानकारी थी कि एयर अरेबिया से आ रहा एक पैसेंजर गोल्ड की स्मगलिंग कर रहा है। सऊदी अरब की राजधानी रियाद से जयपुर पहुंची फ्लाइट के गेट जैसे ही खुले एजेंसी की टीम अलर्ट हो गई। डीबोर्डिंग शुरू होते ही एजेंसी के लोगों ने पहले से मिली सूचना के आधार पर आरोपी पैसेंजर की तलाश शुरू कर दी।

पहली जांच में आरोपी के पास कुछ नहीं मिला- एजेंसी के सूत्रों के अनुसार शक के आधार पर आरोपी पैसेंजर को कस्टम जांच के लिए रुकवाया गया, लेकिन उसके पास कुछ नहीं मिला। हालांकि, जांच के दौरान आरोपी के बदले हावभाव से जांच करने वाली टीम का शक गहरा गया। आरोपी पैसेंजर की अलग से ले जाकर फिर जांच की गई और पूछताछ शुरू हुई, लेकिन कुछ नहीं मिला।

772 ग्राम गोल्ड की प्राइवेट पार्ट से रिकवरी- शक के आधार पर एजेंसी ने कोर्ट से तुरंत यात्री का एक्स-रे करवाने की परमिशन ली। जिसमें पेस्ट के तौर पर प्राइवेट पार्ट में छुपाया गया गोल्ड नजर आया। इसकी कीमत करीब 70 लाख रुपए बताई जा रही है।

अजय फगोड़िया, तस्करी का मास्टर माइंड

जम्मू के कठुआ में सेना-आतंकियों के बीच एनकाउंटर

- डीएसपी समेत 4 पुलिसकर्मी घायल

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में गुरुवार की सुबह से सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ जारी थी। डीएसपी धीरज सिंह समेत चार पुलिसकर्मियों को गोली लगी है, जिन्हें नजदीकी अस्पताल ले जाया गया।सुरक्षा बलों ने पूरे इलाके को घेर लिया है और ऑपरेशन जारी थी। जुठाना इलाके में 4-5 आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया, इस दौरान फायरिंग शुरू हो गई।इससे पहले सोमवार को कठुआ के हीरानगर सेक्टर में आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ हुई थी। तब आतंकियों ने एक बच्ची और उसके माता-पिता को पकड़ लिया था।

मौका मिलने पर तीनों आतंकियों के चंगुल से भाग निकले थे। इस दौरान बच्ची की मामूली चोटें आई थीं। आतंकी भी भाग निकले थे।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पुलिस की झड़प

लाठियां बरसाईं, वाटर कैनन छोड़े, पार्टी के सभी विधायकों के निलंबन पर प्रदर्शन

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा में कांग्रेस ने अपने सभी 14 विधायकों के निलंबन के विरोध में गुरुवार को प्रदर्शन किया। विधानसभा घेरने के लिए कार्यकर्ता विधानसभा की ओर बढ़ रहे थे। इस दौरान पुलिस से उनकी झड़प हो गई। दरअसल 25 मार्च को कांग्रेस के 12 विधायक निलंबित कर दिए गए थे। इसके बावजूद विधायक प्रदर्शन करते रहे और पूरी रात सदन में बिताई। विधानसभा के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ता प्रदर्शन करते रहे।अगले दिन यानी 26 मार्च को कांग्रेस कार्यकर्ता और निलंबित विधायक विधानसभा के बाहर प्रदर्शन करते रहे। वे विधानसभा की बढ़े तो पुलिस ने उन्हें रोक दिया। इसके बाद जमकर धक्का-मुक्की हुई। सदन के भीतर कांग्रेस के बचे हुए दो विधायकों तारा प्रसाद बाहिनीपति और रमेश जेना ने इस मुद्दे पर प्रदर्शन किया। दोनों सदन की वेल में आकर प्रदर्शन कर रहे थे इसलिए उन्हें भी निलंबित कर दिया गया था।

इंदौर में क्रिकेट का रोमांच, महिला वर्ल्डकप के होंगे मैच

आईपीएल की तर्ज पर मध्यप्रदेश प्रीमियर लीग के भी मुकाबले

इंदौर (एजेंसी) इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टूर्नामेंट के मैच भले इंदौर को न मिले हों लेकिन क्रिकेट प्रेमियों की निराशा विमेंस वर्ल्ड कप मैच के मिलने से दूर हो जाएगी। दरअसल, 29 सितंबर से आईसीसी विमेंस वर्ल्ड कप शुरू हो रहा है। इस बार मेजबानी भारत कर रहा है। इस नाते इंदौर में भी मैच खेले जाएंगे।

इंदौर के अलावा रायपुर, विशाखापट्टनम, मोहाली और तिरुवनंतपुरम में भी मैच होंगे। हालांकि, ये अभी तय नहीं है कि इंदौर में कितने मैच होंगे और कौन-कौन से देशों की टीमें यहां भिड़ेंगी। इसका शेड्यूल अभी तय होना बाकी है।

मध्यप्रदेश को 2018 के बाद लगातार 7वें साल आईपीएल का एक भी मैच नहीं मिला है। इससे यहां के फैंस मायूस नजर आ रहे हैं। 14 जनवरी 2024 को इंदौर में आखिरी इंटरनेशनल टी-20 मैच खेला गया था।

यह मैच होलकर स्टेडियम में भारत और अफगानिस्तान के बीच था। इसके बाद यह माना जा रहा था कि 2025 के शेड्यूल में इंदौर को एक मैच जरूर मिल सकता है। इंदौर के होलकर स्टेडियम में अब तक 9 इंटरनेशनल मैच और इतने ही आईपीएल मैच हो चुके हैं।

भारत 12 साल बाद विमेंस वर्ल्ड कप की मेजबानी करने जा रहा है। इससे पहले 2013 में महिलाओं के वनडे वर्ल्ड कप की मेजबानी की थी।

विमेंस वनडे वर्ल्ड कप में 8 टीमें हिस्सा लेंगी। मेजबान भारत समेत ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका, न्यूजीलैंड और श्रीलंका ने क्वालिफाई कर लिया है। वहीं, 2 जगह के लिए 9 अप्रैल से पाकिस्तान में क्वालिफायर मुकाबले खेले जाने हैं।

इसमें पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, बांग्लादेश, आयरलैंड, थाईलैंड और स्कॉटलैंड की टीमों के नाम हैं। क्वालिफायर टीम के नाम फाइनल होने के बाद ही सभी मैचों के शेड्यूल तय होंगे।

मोहाली, तिरुवनंतपुरम और रायपुर में अब तक विमेंस इंटरनेशनल मैच नहीं हुए हैं। इंदौर के नेहरू स्टेडियम में 2 विमेंस मैच हुए हैं, जिनमें से एक 1997 के वर्ल्ड कप में हुआ था। विशाखापट्टनम का एसीए-वीडीसीए स्टेडियम विमेंस इंटरनेशनल मैच की होस्टिंग कर चुका है। यहां 5 वनडे और 6 टी-20 खेले जा चुके हैं।

2024 में एमपीएल के उद्घाटन मैच के पहले सीएम डॉ. मोहन यादव ने नए क्रिकेट स्टेडियम का शुभारंभ किया था। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, बीसीसीआई सचिव जय शाह, पूर्व कप्तान कपिल देव मौजूद रहे थे।

2024 में एमपीएल के उद्घाटन मैच के पहले सीएम डॉ. मोहन यादव ने नए क्रिकेट स्टेडियम का शुभारंभ किया था। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, बीसीसीआई सचिव जय शाह, पूर्व कप्तान कपिल देव मौजूद रहे थे।

आईपीएल की तर्ज पर एमपीएल टी-20 (मध्य प्रदेश प्रीमियर लीग) 2025 इस बार इंदौर में होगा। मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन ने इस साल मध्यप्रदेश प्रीमियर लीग के दूसरे सीजन को इंदौर के होलकर स्टेडियम में आयोजित करने का फैसला किया है।

पिछले साल यह टूर्नामेंट ग्वालियर में हुआ था, लेकिन इस बार रोटेशन पॉलिसी के तहत इंदौर को मेजबानी मिली है।

मेसी 14 साल बाद भारत में फ्रेंडली मैच खेलेंगे

कोलकाता (एजेंसी)। लियोनेल मेसी 14 साल बाद भारत में फ्रेंडली मैच खेलने के लिए अर्जेंटीना टीम के साथ आएंगे। बुधवार को अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन इसकी घोषणा की। इससे पहले मेसी ने 2011 में भारत का दौरा किया था, जब अर्जेंटीना ने कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में वेनेजुएला के खिलाफ वर्ल्ड कप क्वालिफिकेशन मैच खेला था। केरल के खेल मंत्री वी अब्दुरहीमन ने पिछले साल नवंबर में अर्जेंटीना की टीम का केरल का दौरा करने और कोच्चि में दो दोस्ताना मैच खेलने की घोषणा की थी। एचएसबीसी इंडिया बुधवार को भारत में फुटबॉल के सहयोग और प्रचार के लिए अर्जेंटीना की टीम का आधिकारिक साझेदार बन गया। उसने घोषणा की कि मैच अक्टूबर में आयोजित किए जाएंगे। एचएसबीएस इंडिया ने बताया कि इस साझेदारी के तहत दिग्गज खिलाड़ी लियोनेल मेसी समेत अर्जेंटीना की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम अक्टूबर 2025 में एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी मैच खेलने के लिए भारत का दौरा करेगी।

सीएसके-आरसीबी आईपीएल 2025

चेन्नई में जीत के 17 साल के इंतजार को खत्म करने उतरेगा आरसीबी

चेन्नई (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) शुक्रवार को यहां इंडियन प्रीमियर लीग मैच में जब चेन्नई सुपर किंग्स से भिड़ेगा तो टीम की नजरें यहां जीत के 17 साल के इंतजार को खत्म करने के लिए अपने अनुभवी बल्लेबाजों पर टिकी होंगी। आरसीबी ने चेपक में सुपर किंग्स को सिर्फ एक बार हराया है और वह भी 2008 में टूर्नामेंट के पहले सत्र में। आरसीबी की मौजूदा टीम में सिर्फ स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ही उस मैच का हिस्सा थे और अब वह दूसरी बार सुपर किंग्स के किले को भेदना चाहेंगे। हालांकि आरसीबी की राह आसान नहीं होगी। हमेशा की तरह चेन्नई की टीम स्पिनरों की मददगार पिच पर अपने घरेलू मैचों में विरोधी टीमों को कड़ी टक्कर देने को तैयार होगी। टीम के पास अनुभवी रविंद्र जडेजा हैं जो लंबे समय से टीम का हिस्सा हैं जबकि पिछले साल खिलाड़ियों की नीलामी के जरिए उन्होंने अपने 'पुराने खिलाड़ी' रचिचंद्रन अश्विन को टीम के साथ जोड़ा है।

चेन्नई की टीम ने अफगानिस्तान के बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर नूर अहमद को भी टीम में शामिल किया है और इस तिकड़ी ने कुछ दिन पहले पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया था।

टीमें

चेन्नई सुपर किंग्स -रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), महेंद्र धोनी, रविंद्र जडेजा, शिवम दुबे, मथीशा पथिराना, नूर अहमद, रचिचंद्रन अश्विन, डेवोन कॉनवे, सैयद खलील अहमद, रचिन रविंद्र, राहुल त्रिपाठी, विजय शंकर, सैम कुरेन, शेख राशिद, अंशुल कंबोज, मुकेश चौधरी, दीपक हुड्डा, गुरजंगप्रीत सिंह, नाथन एलिस, जेमी ओवरटन, कमलेश नागरकोटी, रामकृष्णन घोष, श्रेयस गोपाल, वंश बेदी और आंद्रे सिद्धार्थ।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु - रजत पाटीदार (कप्तान), विराट कोहली, राशे दयाल, जोश हेजलवुड, फिल सॉल्ट, जितेश शर्मा, लियाम लिविंगस्टोन, रसिख सलाम, सुयश शर्मा, कृणाल पांड्या, भुवनेश्वर कुमार, स्वप्निल सिंह, टिम डेविड, रोमारियो शेफर्ड, नुवान तुषारा, मनोज भंडागे, जैकब बेथेल, देवदत्त पडिक्कल, स्वस्तिक चिकारा, लुंगी एनगिडी, अभिनंदन सिंह और मोहित राठी।

समय - शाम 7.30 बजे।

न्यूजीलैंड को पाकिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज से पहले लगा झटका, टॉम लाथम बाहर

वेलिंग्टन (एजेंसी)। पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली एकदिवसीय सीरीज से पहले न्यूजीलैंड को बड़ा झटका लगा है टीम के कप्तान टॉम लाथम चोटिल होने के कारण सीरीज से बाहर हो गए है। लाथम को इस साहाह दाहिने हाथ में चोट लगी थी। प्रशिक्षण के दौरान लैथम के हाथ में फ्रैक्चर हुआ था।

न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बताया कि एक्स-रे रिपोर्ट में गंभीर चोट की पुष्टि हुई है। लाथम की गैरमौजूदगी में माइकल ब्रेसवेल टीम की कमान संभालेंगे जबकि हेनरी निकोल्स को टीम में शामिल किया गया है। न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड ने कहा, 'सीरीज की पूर्व संध्या पर कप्तान टॉम लेथम का चोटिल होना निश्चित रूप से निराशाजनक है और हम उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। टी-20 सीरीज में शानदार प्रदर्शन करने वाले माइकल के साथ टीम सुरक्षित हाथों में है।

उन्होंने कहा, 'हमें इस दौरे में लचीलापन रुख रखना होगा क्योंकि कई खिलाड़ी अलग-अलग कारणों से उपलब्ध नहीं थे। इससे अन्य खिलाड़ियों को अवसर मिले और पहली बार रीस मारियू को टीम में शामिल करना अच्छा लगा, साथ ही हेनरी का स्वागत भी हुआ। तीन महीने की चोट के बाद वापसी करने के बाद से हेनरी अच्छी फॉर्म में हैं और उनके आने से टीम में बहुमूल्य कौशल और अनुभव जुड़ेगा। गौरतलब है कि न्यूजीलैंड पाकिस्तान के साथ होने वाले एकदिवसीय सीरीज की मेजबानी कर रहा है।

शनि अमावस्या के दुर्लभ संयोग में शनि कर रहे राशि परिवर्तन, अचानक से पलटेगी इन 5 राशियों की किस्मत, इन उपायों से पा सकते हैं दोगुना लाभ

शनिदेव करीब ढाई साल बाद 29 मार्च को राशि परिवर्तन करके मीन राशि में प्रवेश करेंगे। अबकी बार शनि का राशि परिवर्तन बेहद दुर्लभ योग में हो रहा है। 29 मार्च को अमावस्या तिथि और दिन शनिवार होने की वजह से शनि अमावस्या का दुर्लभ संयोग बन रहा है। ज्योतिष में इसे बेहद प्रभावशाली संयोग माना जा रहा है। शनि अमावस्या के दुर्लभ योग में शनि का राशि परिवर्तन तुला और मकर सहित 5 राशियों के लिए बेहद अनुकूल फल देने वाला माना जा रहा है। मार्च के बाद इन राशियों को प्रमोशन की खुशखबरी मिल सकती है और इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। साथ ही जानिए शनि अमावस्या के उपाय।

शनि महाराज अबकी बार शनि अमावस्या के दुर्लभ संयोग में राशि परिवर्तन करेंगे। शनिदेव करीब ढाई साल के लंबे अंतराल के बाद अपनी मूलत्रिकोण राशि कुंभ से निकलकर गुरु की राशि मीन में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को शनि अमावस्या का बहुत ही दुर्लभ संयोग बन रहा है। शनिदेव 29 मार्च को रात में 10 बजकर 7 मिनट पर मीन राशि में प्रवेश कर जाएंगे। मीन राशि में करीब 30 साल बाद शनि का गोचर होगा। यह गोचर तुला और मकर सहित 5 राशियों के जीवन में बड़े बदलाव लेकर आएगा। इनके करियर की राह में आ रही सभी बाधाएं दूर होंगी और साथ ही इनको अचानक से कहीं से रुका पैसा मिल सकता है। आइए जानते हैं शनि गोचर से लाभ पाने वाली कौन सी हैं 5 राशियां साथ ही जानें शनि को अनुकूल बनाने के खास उपाय।

शनि गोचर का कर्क राशि पर प्रभाव

कर्क राशि वालों के लिए शनि सातवें और आठवें भाव के स्वामी है और गोचर के वक्त आपके नौवें भाव में प्रवेश करेगा। यह गोचर कर्क राशि वालों के लिए मुश्किल वक्त का अंत करने वाला माना जा रहा है। आपके जीवन में अब एक नई शुरुआत होगी। काम से संबंधित बाधाएं धीरे-धीरे दूर होंगी और व्यावसायिक यात्राएं फायदेमंद साबित होंगी और आपके जीवनसाथी के साथ आपके संबंध बेहतर होने लगेंगे। एक साथ लंबी यात्राएं आपके बंधन को मजबूत करेंगी और इससे आपस की सभी गलतफहमियां दूर होंगी। आपको व्यापक यात्रा के अवसर मिलेंगे और अचानक वित्तीय लाभ होने की संभावना है। लंबे समय से अटका हुआ धन मिलना शुरू हो जाएगा। जुलाई से नवंबर तक आपको सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसके बाद स्थितियां अधिक अनुकूल हो जाएंगी। आपके शत्रुओं का नाश होगा और आपकी आय बढ़ेगी। इच्छाएं पूरी होंगी और आपको अप्रत्याशित वित्तीय लाभ हो सकता है। शेयर बाजार में निवेश से भी इस दौरान लाभ हो सकता है। फिर भी, आपके पिता का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो सकता है, इसलिए उनका ध्यान रखना जरूरी है। शनि अमावस्या पर शाम के वक्त दीपदान और पूजापाठ करने से आपको पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

शनि गोचर का कन्या राशि पर प्रभाव

कन्या राशि वालों के लिए शनि पांचवें और छठे भाव के स्वामी है और आपके सातवें भाव में प्रवेश करेगा। इस गोचर के अनुकूल प्रभाव से आपको प्रेम विवाह के अवसर मिल सकते हैं। यदि आप वर्तमान में किसी रिश्ते में हैं, तो यह शादी का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। शादी, व्यावसायिक प्रयासों या अन्य आवश्यक मामलों के लिए बैंकों से ऋण प्राप्त करने की संभावना है। इस समय व्यावसायिक भागीदारों के साथ संबंधों को पोषित करना महत्वपूर्ण है। शनि का प्रभाव नौवें, पहले और चौथे भाव पर होने से व्यापक यात्रा की संभावनाएं हैं, जो थकाऊ होने के बावजूद मानसिक शांति ला सकती हैं। जुलाई से नवंबर तक परिवार के सदस्यों के बीच कलह हो सकती है, जिससे घर का माहौल प्रभावित हो सकता है। इस चरण के दौरान धैर्य और स्थितियों को चतुराई से संभालना आवश्यक होगा। यह गोचर दीर्घकालिक निवेश और अंतरराष्ट्रीय व्यापार उद्यमों का समर्थन करता है। शनि अमावस्या की शाम को पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाने से आपके कष्ट दूर होंगे।

शनि गोचर का तुला राशि पर प्रभाव

तुला राशि वालों के लिए शनि चौथे और पांचवें भाव का स्वामी है और शनि आपके छठे भाव में प्रवेश करेगा। यह स्थिति शुभ है, जो शत्रुओं पर विजय और आपके पेशेवर क्षेत्र में प्रभाव में वृद्धि का वादा करती है। काम पर आपके मेहनती प्रयासों से उचित पुरस्कार मिलेंगे, जिससे आपकी स्थिति मजबूत होगी और आप प्रतिस्पर्धी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे। स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने के लिए आलस्य से बचें, खासकर जुलाई और नवंबर के बीच, पारिवारिक मामले, विशेष रूप से संपत्ति विवाद, उत्पन्न हो सकते हैं और उन्हें सावधानीपूर्वक संभालने की आवश्यकता होगी। शनि का प्रभाव स्वास्थ्य में सुधार करने और प्रगति को बढ़ावा देने में मदद करेगा। सफलता की कुंजी मिलेगी और आपको अपने लक्ष्यों के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध रहने के लिए प्रेरित करेगी। परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को यह अवधि विशेष रूप से फायदेमंद लग सकती है, हालांकि शनि इस बात पर जोर देता है कि परिश्रम सर्वोपरि है। शनि अमावस्या के दिन सुबह किसी पवित्र नदी में स्नान करें और शाम को दीपदान करें।

शनि गोचर का वृश्चिक राशि पर प्रभाव

वृश्चिक राशि वालों के लिए शनि तीसरे और चौथे भाव का स्वामी है और शनि आपके पांचवें भाव में प्रवेश करेगा। यह गोचर आपके रोमांटिक रिश्तों को मजबूत करेगा, जिससे आप अपने प्रियजन के करीब आएंगे और आपका बंधन गजबूत होगा। आप अपने रिश्ते में ईमानदारी से शामिल होंगे और जिससे आप प्यार करते हैं उससे शादी करने का प्रयास कर सकते हैं। इस अवधि के दौरान आप सफलतापूर्वक नौकरी बदल सकते हैं, लेकिन जुलाई और नवंबर के बीच किसी भी नौकरी परिवर्तन से बचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप नौकरी छूट सकती है। इन महीनों से पहले और बाद की अवधि अधिक अनुकूल रहेगी। आपके बच्चों के बारे में कुछ चिंताएं हो सकती हैं, लेकिन उनके अच्छी प्रगति करने की संभावना है। आपकी आय में वृद्धि हो सकती है, और व्यवसायियों के लिए कमाई बढ़ाने के लिए नई निवेश रणनीतियों का पता लगाना बुद्धिमानी होगी। शेयर बाजार में निवेश लाभदायक हो सकता है, आप धन संचय करने के लिए जितना अधिक प्रयास करेंगे, आपको उतनी ही अधिक वित्तीय सफलता मिलेगी। शनि अमावस्या के दिन सुबह पूजा करने के बाद घर के मुख्य द्वार पर दीपक जलाने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है।

शनि गोचर का मकर राशि पर प्रभाव

शनि 2025 में आपके तीसरे भाव में गोचर कर रहा है और आपकी साढ़ेसाती समाप्त हो रही है। मकर राशि वालों को बदलाव का अनुभव होगा। शनि, जो मकर राशि और दूसरे भाव का स्वामी है, आमतौर पर तीसरे भाव में अनुकूल प्रभाव डालता है। इस स्थिति से शनि आपके पांचवें, नौवें और बारहवें भाव पर दृष्टि डालेगा। धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जबकि आपके भाई-बहनों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, लेकिन उनके साथ आपके संबंध सकारात्मक बने रहेंगे। आपके बच्चे महत्वपूर्ण प्रगति करेंगे, और आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा, जिससे आपकी बुद्धि और चतुराई के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में आपकी सफलता में मदद मिलेगी। अपने माता-पिता के स्वास्थ्य पर कड़ी नजर रखें। नवंबर के बाद स्थितियों में सुधार होने की संभावना है। इस दौरान सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत और प्रयास महत्वपूर्ण होंगे। शनि अमावस्या के दिन शाम के वक्त शमी के पेड़ पर तिल के तेल का दीपक जलाने से आपके सभी कष्ट दूर होंगे।

क्या कहते आपके सितारे

मेष मेष राशि- आशा-निराशा के भाव मन में हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन कष्टमय हो सकता है। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। खर्चों की अधिकता रहेगी। कार्यक्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। धन की स्थिति में सुधार होगा। आत्मविश्वास में कमी आएगी। नौकरी में अफसरों से वैचारिक मतभेद बढ़ सकते हैं। इच्छाविरुद्ध कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। क्रोध की अधिकता रहेगी।

वृषभ वृषभ राशि- जीवनसाथी का सानिध्य मिलेगा। माता-पिता को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं। मानसिक शान्ति? के लिए प्रयास करें। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। परिवार की समस्याएं परेशान कर सकती हैं। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। खर्च भी बढ़ेंगे। धार्मिक संगीत के प्रति रुचि रहेगी। वाहन सुख का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में परिश्रम अधिक रहेगा।

मिथुन मिथुन राशि- मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक एवं मांगलिक कार्य होंगे। भवन के रखरखाव एवं साज-सज्जा के कार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। संयत रहें। क्रोध एवं आवेश के अतिरेक से बचने का प्रयास करें। शैक्षिक या बौद्धिक कार्यों के लिए यात्रा पर जाना हो सकता है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहेगा। खर्चों में वृद्धि होगी। माता को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में व्यवधान आ सकते हैं।

कर्क कर्क राशि- क्रोध एवं आवेश के अतिरेक से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। सेहत का ध्यान रखें। बौद्धिक कार्यों से आय होगी। कारोबार की स्थिति संतोषजनक रहेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। वाणी में मधुरता रहेगी। रहन-सहन अव्यवस्थित हो सकता है। मन अशान्त रहेगा। नौकरी में जिम्मेदारी बढ़ सकती है। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी के लिए साक्षात्कारादि कार्यों के सार्थक परिणाम मिलेंगे।

सिंह सिंह राशि- आलस्य की अधिकता हो सकती है। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में सुधार हो सकता है। लाभ के अवसर मिलेंगे। क्षणे रुष्टा-क्षणे तुष्टा की मानसिकता हो सकती है। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार के अवसर मिल सकते हैं। आशा-निराशा के मिश्रित भाव रहेंगे। सन्तान के दायित्व की पूर्ति होगी। माता को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं। स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहेगा। परिश्रम अधिक रहेगा, परन्तु यथोचित परिणाम मुश्किल है।

कन्या कन्या राशि- मन में नकारात्मकता का प्रभाव हो सकता है। क्रोध से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अनसर मिल सकते हैं। आय बढ़ेगी। संयत रहें। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। सुस्वादु खानपान में रुचि बढ़ सकती है। क्रोध के अतिरेक से बचें। अनियोजित खर्चों में वृद्धि होगी। आय की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। बातचीत में सयत रहें।

तुला तुला राशि- मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। कारोबार में कठिनाइयां आ सकती हैं। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। वाहन के रखरखाव पर खर्च बढ़ सकते हैं। आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। नौकरी में परिवर्तन के साथ तरक्की के योग बन रहे हैं। आय में वृद्धि होगी। सेहत का ध्यान रखें। बातचीत में सन्तुलन बनाये रखें। कार्यक्षेत्र में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी मित्र से मतभेद बढ़ सकते हैं।

वृश्चिक वृश्चिक राशि- धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार का सहयोग मिलेगा। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। अपनी भावनाओं को वश में रखें। आत्मसंयत रहें। पिता से धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ सकती है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। कारोबार की स्थिति में सुधार होगा।

धनु धनु राशि- कारोबार में सुधार के लिए भाई-बहन का सहयोग मिल सकता है। पिता से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। भागदौड़ अधिक रहेगी। संयत रहें। किसी अज्ञात भय से परेशान हो सकते हैं। किसी मित्र के सहयोग से आय के नए स्रोत विकसित होंगे। सेहत का ध्यान रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कार्यक्षेत्र का विस्तार हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। वाणी का प्रभाव रहेगा। कुटुम्ब के किसी बुजुर्ग से धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं।

मकर मकर राशि- मन शान्त रहेगा। कारोबार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। किसी मित्र से धन मिल सकता है। क्षणे रुष्टा-क्षणे तुष्टा की मन स्थिति रहेगी। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। यात्रा पर जाना पड़ सकता है। चिकित्सीय खर्च बढ़ सकते हैं। माता का साथ रहेगा। भाइयों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। खर्चों की अधिकता रहेगी। अधिक परिश्रम के बावजूद भी सफलता संदिग्ध है।

कुंभ कुंभ राशि- आत्मसंयत रहें। धार्मिक संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। मन अशान्त हो सकता है। धर्म-कर्म में व्यस्तता रहेगी। आय में वृद्धि होगी। खर्च भी बढ़ेंगे। कार्यक्षेत्र में परेशानियां बनी रह सकती हैं। सन्तान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। किसी पैतृक सम्पत्ति से धन की प्राप्ति हो सकती है। बातचीत में संयत रहें। किसी धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग कर सकते हैं मित्रों से

मीन मीन राशि- व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद हो सकते हैं। घर-परिवार में धार्मिक कार्यों के योग बन रहे हैं। सम्पत्ति में वृद्धि हो सकती है। कारोबार में लाभ बढ़ेगा। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। अफसरों का सहयोग मिलेगा। धन की स्थिति में सुधार होगा। खर्चों में कमी आ सकती है। परिवार की समस्याएं परेशान कर सकती हैं। रहन-सहन अव्यवस्थित हो सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। अफसरों में मतभेद हो सकते हैं। अनियोजित खर्चों में वृद्धि होगी।

G. KACHHOMAL
ALL KINDS OF SWEETS & SNACKS
WE ALSO ACCEPT PARTY ORDERS
Raju K.Panjwani - 2531293, 3211365
Rakesh K. Panjwani - 9890359000
Shop No. 132, Opp. Mat Mandir, Ulhasnagar-5.

SHREE Rajaveer FOOD PRODUCTS
T.S.Chandwani
Specialist In :- Bread, Cake & Biscuits
Fact.: Amar Dye Rd., Near Shahad Cabin, Ulhasnagar-1. Tel. 2546079
Office : Baba Sai Nagar, Block A252/504, Ulhasnagar-4. Tel. 2527034

Hotel Ambrosia
Dayanand Shetty
2713001, 2712002, 2712003, 2564257
Opp. Vithalwadi Rly, Station (W), Ulhasnagar-421003.

Hotel VEEJAYS
24 Hours Room service available
Lodging and Boarding
Ulhasnagar Station Road, Burner Galli, Sukhdev Compound, Ulhasnagar-3
Tel. : 02512570009
Mob. : 07083880259

LIVE IN LAP OF LUXURY
RAMDEVI TOWER
MAHARERA- P51700078649
1BHK & 2BHK & COMMERCIAL SHOPS AVAILABLE
Contact:
7770003478
7770003479
Gmail: ramdevitower2024@gmail.com
SITE ADDRESS :
B. K No- 1150,
ROOM NO. 3,4,5,6
POWAI CHOWK,
ULHASNAGAR - 421003.
DIST- THANE

Makhija Construction
25 YEARS Experience
BUILDING QUALITY TRUST
+ Email : makhijaconstruction@gmail.com, makhijaconstruction@hotmail.com
+ Hollywood Apartment, Shop No. 2 & 3, Opp., ICICI Bank, Near Chopra Court, Ulhasnagar-3 Ph.0251-2563555

प्रकाशक, मुद्रक, मालिक संपादक श्री टीकम (टोनी) जे. लालवानी ने जय श्रीकृष्णा प्रिंटिंग प्रेस से छपवाकर मातोश्री मोहिनी बाई पैलेस, बैरक नंबर 427, रूम नंबर 15, निरंकारी हॉल के पीछे, उल्हासनगर-421001, जिला ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया।
RNI No. 68359/93,
(सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र उल्हासनगर रहेगा)
दैनिक 'धनुषधारी' में छपने वाली विज्ञापनों की सत्यता की जिम्मेदारी हमारी अखबार प्रबंधन की नही है। विज्ञापन में छपने वाले उत्पाद खरीदने, बेचने या किसी भी व्यवसाय या नौकरी लेने-या देने की जिम्मेदारी पाठक की खुद की रहेगी। -प्रबंधन।

शिंदे गुट के दो पदाधिकारियों के बीच जूतमपैजार, 16 पर मामला दर्ज

कल्याण (अरविंद मिश्रा)। शिवसेना शिंदे गुट के दो पदाधिकारियों के बीच पानी के मसले को लेकर मारपीट हो गयी। पानी की समस्या के समाधान में कौन कितना जोर लगा रहा है इसी बात को लेकर कोलसेवाड़ी पुलिस स्टेशन में जूतमपैजार हुआ। मनपा चुनाव को नजदीक देखकर श्रेय लेने की होड़ में कोलसेवाड़ी पुलिस स्टेशन में ही दोनों पदाधिकारी व समर्थक भिड़ गए जिसमे एक पदाधिकारी के सिर में चोट आई है। घटना मंगलवार की है शास्त्री नगर में पानी की आपूर्ति के लिए किसने ज्यादा जोर लगाया इस बात को लेकर पहले उप जिला प्रमुख मल्लेश शेट्टी और शिंदे गुट के उपशहर प्रमुख दिलीप दाखिनकर के बीच कहासुनी हुई जिसकी परिणति मारपीट में हुई। विशेष यह कि दोनों पदाधिकारियों को यह सुध नही रही कि वह पुलिस स्टेशन में हैं और आपराधिक घटना को अंजाम दे दिया।

मल्लेश शेट्टी द्वारा यह आरोप लगाया गया कि दिलीप दाखिनकर ने उनकी भाभी के साथ दुर्व्यवहार किया जिसके कारण यह मारपीट हुई। फिलहाल कोलसेवाड़ी पुलिस ने दोनों पक्षों के 13 नामजद व्यक्तियों सहित 3 अज्ञात लोगों पर मामला दर्ज किया है और जांच शुरू की गई है। फिलहाल पार्टी के बड़े पदाधिकारियों को इस मामले में हस्तक्षेप करने की नितांत आवश्यकता है अन्यथा यह एक बड़ी वारदात का कारण बन सकता है. वहीं पुलिस को भी ऐसे मामलों में सख्ती बरतने की जरूरत है जिससे पुलिस का खौफ कायम रहे।

आईटी इंजीनियर युवती को सॉफ्ट ड्रिंक में नींद की गोलियां देकर सामूहिक दुष्कर्म

मुंबई (नि.स.)। पुणे की एक युवा आईटी इंजीनियर को शीतल पेय में नींद की गोलियां देकर उसके साथ चार लोगों द्वारा सामूहिक बलात्कार करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। उसके बाद एक चौंकाने वाली घटना ये सामने आई है जिसमें युवती को उसकी फोटो वायरल करने की धमकी देकर उससे 30 लाख रुपये और दो आईफोन ऐंठ लिए गए। यह घटना मुंबई के कांदिवली स्थित फैब होटल स्प्रिंग इन तथा एक कार में घटी। इस मामले में 33 वर्षीय महिला ने कालेपडल पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है।

तदनुसार, पुलिस ने तमीम हरसल्ला खान (कांदिवली निवासी) और उसके तीन अन्य दोस्तों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है, जिसमें बलात्कार, अप्राकृतिक कृत्य, धोखाधड़ी, अपहरण, धमकी और हमला शामिल है। इस बीच, चूंकि यह घटना कांदिवली में घटी, इसलिए मामले को आगे की जांच के लिए कांदिवली पुलिस स्टेशन को स्थानांतरित कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता मूल रूप से कर्नाटक की रहने वाली है और वह फ़िलहाल पुणे शहर में रहती हैं जहाँ वह आईटी सेक्टर में काम करती हैं। 2021 में उसकी मुलाकात फेसबुक के जरिए आरोपी खान से हुई। खान ने कहा था कि उनके पिता का भवन निर्माण संबंधी बड़ा कारोबार है और वो सब कुछ संभालता है। इसके बाद दोनों के बीच परिचय बढ़ता गया। खान ने युवती को शादी का झांसा देकर अपने जाल में फंसाया। युवती खान से मिलने कांदिवली गई थी। दोनों की मुलाकात यहां फैब होटल में हुई। उस समय खान ने युवती को एक शीतल पेय दिया जिसमें नशीली गोलियां थीं। इसके बाद उसने युवती के साथ बलात्कार किया। खान ने युवती को अपनी कार में ले जाकर मुंबई और पुणे में उसके साथ बलात्कार किया। जब खान कार में लड़की के साथ दुष्कर्म कर रहा था, तब उसने अपने तीन अन्य दोस्तों को भी बुला लिया। तीनों ने बारी-बारी से युवती के साथ अप्राकृतिक दुष्कर्म किया। बहरहाल मुंबई की कांदिवली पुलिस आगे की जांच कर रही है।

अभिनेत्री ऐश्वर्या राय की कार को बेस्ट बस ने मारी टक्कर

मुंबई (नि.स.)। बॉलीवुड अभिनेत्री ऐश्वर्या राय की कार मुंबई में दुर्घटनाग्रस्त हो गई। यह दुर्घटना मुंबई में घटित हुई जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। वीडियो में बेस्ट बस ऐश्वर्या की कार को टक्कर मारती हुई दिखाई दे रही है। हालांकि इस दुर्घटना में कोई चोट या बड़ी क्षति नहीं हुई। बताया जा रहा है कि ऐश्वर्या की कार को बेस्ट बस से मामूली टक्कर लगी थी। बताया गया है कि बुधवार शाम ऐश्वर्या राय की सिल्वर वेलफायर कार जुहू इलाके में अमिताभ बच्चन के बंगले के सामने सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। जुहू बस डिपो से निकलकर सांताक्रूज़ स्टेशन जा रही बस संख्या 231 ने ऐश्वर्या राय बच्चन की कार को पीछे से टक्कर मार दी। इसके बाद बस चालक ने तुरंत बस रोक दी। तभी ऐश्वर्या राय के अंगरक्षक ने बस चालक को थप्पड़ मार दिया। जिसके बाद बस चालक ने पुलिस को फोन कर घटना की सूचना दी। तभी अमिताभ बच्चन के बंगले पर काम देख रहे सुपरवाइजर ने बस ड्राइवर से माफी मांगी। इसके बाद मामला सुलझ गया। दुर्घटना के समय ऐश्वर्या राय बच्चन कार में नहीं थीं।

सांसद म्हात्रे ने संसद में की आईजीएम अस्पताल को जिला अस्पताल का दर्जा देने की मांग

भिवंडी (नि.सं.)। भिवंडी शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ी है, जिसके कारण मनपा प्रशासन एवं सरकार का स्वास्थ्य विभाग यहां के नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने में विफल रहा है। लगभग 12 लाख से अधिक की जनसंख्या वाले शहर में एकमात्र स्व. इंदिरा गांधी मेमोरियल उपजिला अस्पताल है, जिसमें डॉक्टरों एवं अस्पताल कर्मचारियों सहित संसाधनों की भारी कमी है. स्टाफकी कमी एवं अपर्याप्त सुविधाओं के कारण इस उपजिला अस्पताल में नागरिकों को समुचित स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। जिसको लेकर स्थानीय सांसद सांसद सुरेश म्हात्रे उर्फ बाल्या मामा ने बुधवार को लोकसभा में स्व. इंदिरा गांधी मेमोरियल उपजिला अस्पताल को जिला अस्पताल का दर्जा देने की मांग किया।

बतादें कि 100 बेड वाले आईजीएम उपजिला अस्पताल में राज्य सरकार द्वारा अतिरिक्त 100 बेड के लिए मंजूरी दे दी गई है। सरकार द्वारा मंजूरी मिलने के बाद यह अस्पताल 200 बेड का हो जाएगा. इस अस्पताल में 112 स्टाफ पद थे। इसके बाद सरकार द्वारा 258 नए पदों की मंजूरी दे दी गई। लेकिन इन नव स्वीकृत पदों के व्यय हेतु अभी तक प्रशासनिक स्वीकृति नहीं मिली है। इससे अस्पताल में कार्यरत कर्मचारियों पर अतिरिक्त कार्य का दबाव पड़ रहा है। सांसद बाल्या मामा ने आरोप लगाया है कि स्टॉफ एवं संसाधनों की कमी के कारण यहां के नागरिकों को उचित स्वास्थ्य सेवाएं और सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। जिसके कारण उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं एवं गंभीर रूप से बीमार रोगियों को इलाज के लिए मुंबई अथवा ठाणे ले जाना पड़ता है। ठाणे और मुंबई ले जाते समय रास्ते में मरीजों की मौत की कई घटनाएं हुई हैं। सांसद बाल्या मामा ने लोकसभा में मांग की है कि उपजिला अस्पताल को जिला अस्पताल का दर्जा दिया जाए और इस अस्पताल में अत्याधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराई जाएं ताकि स्वास्थ्य सेवाओं सहित अन्य सुविधाएं नागरिकों को उपलब्ध कराई जा सकें।

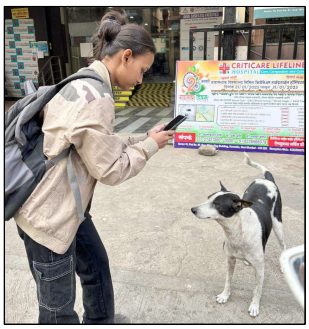

आवारा कुत्तों-बिल्लियों को लेकर पनवेल मनपा का सर्वेक्षण पूरा

एआई सिस्टम का उपयोग करके कुत्तों की डिजिटल जानकारी एकत्र करने वाली पहला शहर बना पनवेल

पनवेल (नि.सं.)। पनवेल मनपा की हद्द में आवारा कुत्तों और बिल्लियों का सर्वेक्षण हाल ही में पूरा हुआ है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (आईई) का उपयोग करके किए गए इस डिजिटल सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त जानकारी आवारा कुत्तों के टीकाकरण और निर्बिजिकरण के लिए उपयोगी साबित होगी. मनपा आयुक्त मंगेश चितले के मार्गदर्शन में किया गया यह सर्वेक्षण देश में पहला ऐसा सर्वेक्षण है जिसमें एआई प्रणाली का उपयोग करके मनपा सीमा के भीतर कुत्तों के बारे में डिजिटल जानकारी एकत्र की गई है. इस सर्वेक्षण का उपयोग पनवेल को रेबीज मुक्त बनाने के लिए होगा, ऐसी जानकारी उपायुक्त डॉ. वैभव विधाते ने दी है।

इंडिकेयर एआई सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड नामक स्टार्ट-अप कंपनी के माध्यम से यह डिजिटल सर्वेक्षण किया गया है. यह पहली बार है जब भारत में इस तरह की पहल लागू की गई है. इस सर्वेक्षण में 19,307 आवारा कुत्तों और 5,080 आवारा बिल्लियों को पंजीकृत किया गया है. इस सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी का उपयोग आवारा कुत्तों के कारण उत्पन्न समस्याओं के समाधान की योजना बनाने में किया जाएगा. यह सर्वेक्षण आवारा कुत्तों पर नियंत्रण पाने में उपयोगी होगा. यह महत्वपूर्ण सर्वेक्षण चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आनंद गोसावी के मार्गदर्शन में पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. भगवान गीते और डॉ. मधुलिका लाड ने किया है. इस डिजिटल सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी का उपयोग मनपा के पशु चिकित्सा विभाग द्वारा भविष्य की विस्तृत योजना बनाने में किया जा सकेगा. इस सर्वेक्षण से यह भी पता लगाया जाएगा कि आवारा कुत्तों की नसबंदी की गई है या नहीं।

काटने वाले कुत्तों का भी आसानी से लगेगा पता

मनपा द्वारा किये गए इस डिजिटल सर्वेक्षण में कुत्ते, बिल्ली की तस्वीर, लिंग, आयु और स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी शामिल है. यदि किसी व्यक्ति को आवारा कुत्ते ने काट लिया तो सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी से यह पता लगाना आसान हो जाएगा कि कुत्ता किस क्षेत्र से है।

नसबंदी की जानकारी भी मिलेगी

मनपा द्वारा 2018 से नसबंदी कार्यक्रम चलाकर इस सर्वेक्षण के तहत कुल 44 प्रतिशत आवारा कुत्तों की नसबंदी की जा चुकी है. इस सर्वेक्षण से पता चला कि वयस्क कुत्तों की संख्या 10,270 है. पिल्लों की संख्या लगभग 1800 है. साथ ही वयस्क कुत्तों की संख्या 1,440 है. जो कि मनपा द्वारा चलाए गए निर्बिजिकरण कार्यक्रम की सफलता को दर्शा रहा है। पनवेल मनपा आयुक्त मंगेश चितले के अनुसार रेबीज के प्रसार को रोकने में मनपा द्वारा कराया गया सर्वेक्षण महत्वपूर्ण होगा. इस सर्वेक्षण का उपयोग आवारा कुत्तों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए भी उपयोगी होगा।

बंदूक लेकर घूम रहे तीन डीजल चोर गिरफ्तार

नवी मुंबई (नि.सं.)। बंदूक लेकर घूम रहे एक नाबालिग समेत तीन डीजल चोरो को पुलिस ने जाल बिछाकर गिरफ्तार किया है. इन चोरो के पास से पुलिस ने एक पिस्टल एंव 4 जिंदा कारतूस जप्त किया है. तीनो आरोपी नेरुल इलाके के रहने वाले है. आगे की जांच पुलिस द्वारा जारी है. इन चोरो की गिरफ्तारी से कई मामलो का खुलासा होने की संभवना पुलिस ने जताई है। पुलिस को जानकारी मिली थी कि पुष्पकनगर इलाके में कुछ लोग हथियार लेकर आने वाले है. जिसके बाद पुलिस ने बुधवार रात जाल बिछाकर स्विफ्ट कार से आये तीन लोगों को हिरासत में लिया. इस दौरान जब पुलिस ने उनकी तलाशी ली तो उनके पास से एक पिस्टल एंव 4 जिंदा कारतुस मिला. पुलिस ने जब उनसे पूछताछ की तो आरोपियों ने बताया कि वह तक्का गांव की पार्किंग में पार्क गाड़ियों से डीजल चोरी करते है और आज भी वे डीजल चोरी के इरादे से आये थे।

बिल्डिंग साईट पर मजदूर की हत्या

पनवेल (नि.सं.)। निर्माणधीन बिल्डिंग साईट पर एक मजदूर की गोली मारकर हत्या किए जाने का मामला सामने आया है. इस संबंध में पनवेल शहर पुलिस ने अज्ञात हमलावर के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार राज मिस्त्री का काम करने वाले एक व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि बुधवार सुबह पनवेल में एक बिल्डिंग निर्माण साईट पर वो और मृतक बाबूराव वाघमारे सेंट्रिग का काम करने गए थे. इस बीच अचानक बाबूराव वाघमारे ने साढ़े चार बजे आकर उनसे कहा की ठेकेदार के साथ किसी का विवाद हुआ है और वे पुलिस से शिकायत करने गए है हमे भी चलना चाहिए. इतने में वहां गोली चलने की आवाज आई और बाबूराव वाघमारे को गोली लगी जिससे वह घायल हो गया और बाद में उसकी मौत हो गयी. पुलिस ने इस बाबत मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

क्राइम ब्रांच ने दो लोगों से बरामद किये 24.65 लाख के 26 लेपटॉप

भिवंडी (नि.सं.)। नारपोली पुलिस स्टेशन क्षेत्र में गोदाम में सेंधमारी करके लैपटॉप चोरी करने के अपराध की समानांतर जांच करते हुए क्राइम ब्रांच यूनिट दो की टीम ने कर्नाटक राज्य से दो लोगों को हिरासत में लिया है. क्राइम ब्रांच की टीम ने उनके पास से 24.65 लाख रुपए मूल्य के 26 महंगे लैपटॉप एवं चोरी में उपयोग किए गए वाहन को बरामद कर लिया है।

पुलिस के अनुसार नारपोली पुलिस स्टेशन अंतर्गत एक गोदाम में सेंधमारी करके 26 लैपटॉप चोरी कर लिया गया था. इस मामले में नारपोली पुलिस स्टेशन में अज्ञात लोगों के विरुद्ध 7 मार्च 2025 को 24.65 लाख रुपए मूल्य के लेपटॉप चोरी की शिकायत दर्ज कर लिया गया था, जिसकी जांच नारपोली पुलिस के साथ क्राइम ब्रांच यूनिट दो की पुलिस भी कर रही थी. इस अपराध की जांच कर रहे क्राइम ब्रांच यूनिट दो के एपीआई के धनराज केदार की टीम ने मुखविर की सूचना, सीसीटीवी फुटेज एवं तकनीकी विश्लेषण के आधार पर गोदाम में सेंधमारी करके लेपटॉप की चोरी करने वाले आरोपियों की पहचान करने में सफलता प्राप्त कर लिया।

क्राइम ब्रांच की टीम इन आरोपियों की तलाश कर ही रही थी कि उसी समय पता चला कि यह दोनों आरोपी कर्नाटक राज्य के कन्याकोल स्थित तांडा जिले के यादगीर में छिपे हुए हैं। आरोपियों के बारे में जानकारी मिलते ही क्राइम ब्रांच यूनिट दो के सीनियर इंस्पेक्टर जनार्दन सोनवणे के मार्गदर्शन में एपीआई धनराज केदार, एपीएसआई सुधाकर चौधरी, पुलिसकर्मी प्रकाश पाटील, प्रशांत राणे, सुदेश घाग, सचिन जाधव, अमोल इंगले, भावेश घरत एवं विजय कुंभार की एक टीम कर्नाटक पहुंच गई. क्राइम ब्रांच की टीम वहां छिपे हुए भिवंडी स्थित पूर्णा गांव के रहने दिलीप चव्हाण (20) अर्जुन राठौड़ (23) को हिरासत में लिया।

क्राइम ब्रांच की टीम ने जब गहन पूछताछ किया तो दोनों आरोपियों लेपटॉप चोरी करने का अपराध कबूल कर लिया. क्राइम ब्रांच की टीम ने चोरी किए गए 26 लेपटॉप एवं चोरी में उपयोग किया गया वाहन सहित कुल 24.65 लाख रुपए मूल्य का सामान बरामद करके जब्त कर लिया है. पुलिस ने बताया कि इस अपराध में गिरफ्तार दिलीप चव्हाण एवं अर्जुन राठौड़ मूलगांव कन्याकोल तांडा, कर्नाटक के रहने वाले हैं। गोदाम की रेकी करके छेनी-हथौड़े की मदद से दीवार तोड़कर चोरी करने वाले दोनों आरोपी आदतन अपराधी हैं। इनके विरुद्ध पहले भी भिवंडी तालुका ग्रामीण पुलिस स्टेशन में चोरी का मामला दर्ज किया जा चुका है।

PUBLIC NOTICE

This public notice is given under instruction from my client Shri Ashok Kamal Pinjani, r/o Ulhasnagar-421004 in respect of property bearing Flat no.1, Ground floor, Talreja Co-op. Housing Society Ltd. area adm. about 371 sq.fts. (Carpet area) constructed on Plot no.196 (Part), Section-8A, Opp. Sadhubela School, Near Govt. Dispensary, Ulhasnagar-421001 (As it is where it is), hereinafter be referred as SAID PROPERTY for the purpose of brevity and whereas the said property is having separate municipal corporation tax assessment record bearing no.17A1015957100 & also having a separate electricity bearing consumer no.021514962496.

This notice is given to public that my client has acquired said property under a valid document and my client is in symbolic occupation and possession of said property and my client want to purchase the said property from the legal occupant cum owner of the said property Mr. Jeetendra Manohar Vazirani (Aadhar no.XXXXXXXX0297) who is residing at present Mohan Suburbia at Ambernath (W) under the Agreement for a valuable consideration for that part payment is already paid to the owner and to avoid any third party interest in terms of ownership or co-ownership or mortgage or charge or any type of monetary investment in respect of said property including any financial loan from any financial institution or in case of redevelopment scenario and therefore my client is giving this public notice at large to avoid any loss of interest of any third person and also of my client regarding the said property mentioned above and therefore to avoid any obstacle or ambiguity or any third party rights to the said property to obtain possession and future dispute free title of ownership therefore this notice is issued to the general public at large for the intimation and also to avoid any legal complication for the said property for past, present and future period for my client.

This notice is given to public at large that no person or firm or H.U.F or persons should deal with any person in respect of above SAID PROPERTY during existence or at the time of redevelopment scenario. Inspite of this public notice if any person deals or already have entered into any type of agreement including registered or unregistered Agreement of sale, Sale Deed, registered or unregistered mortgage deed, lease, registered or unregistered leave & license agreement etc. in respect of said property he/she or that institution may do so entirely at his/her own risk as to cost and consequences, and if any person or persons or institution have any right, interest or investment in above said property then he/she or that institution or persons shall submit written objection to the undersigned on the address mentioned below along with self attested and true copy of valid documents within 15 days from the date of publication of this notice for public at large, if no claim is raised and received by the correct mode of service, within 15 days in that case, my client will take appropriate steps for getting further necessary process regarding the said property to get the fruit of ownership.

Given under my seal on this 26th day of March, 2025.

Sd/-
P.I HINGORANI
ADVOCATE.
P.I HINGORANI, Sheela Niwas, Bk. no.1269, O.T. Section, Ulhasnagar-421004

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given that Heeru Devi Flat no. 201, Happy Home Apt, Near Lassi Hall Ulhasnagar, Thane, Maharashtra - 421001, MOBILE NO - 9970234140 is Applying to the Collector, to the Secretary, to the Government of India in the Ministry of Home Affairs For naturalization and that any person who known any reason why naturalization should not be granted should send a written signed statement of the facts to the said Collector or Secretary.

महाराष्ट्र शासन
सार्वजनिक बांधकाम विभाग
संक्षिप्त ई-निविदा सुचना क्र.८३ सन २०२४-२५

अ.क्र.	कामाचे नाव	अंदाजित रक्कम
१	ठाणे मध्यवर्ती कारागृहाच्या संकुलात कारागृह अधिकारी/कर्मचारी यांचे करिता टाइप ३,४ व ५ ची नवीन शासकीय निवास स्थानांचे बांधकाम करणे.	५,१८,७५,२९०.००

१.	डाऊन लोड करण्याचा कालावधी	: दिनांक २८/०३/२०२५ ते दिनांक ०७/०४/२०२५
२.	निविदा पुर्व बैठक	: दिनांक ०२/०४/२०२५ दुपारी ०२.१० वाजता. मुख्य अभियंता, (सा.बां.) प्रादेशिक विभाग, मुंबई
३.	ई-निविदा उघडणे (शक्य असल्यास)	: दिनांक ०८/०४/२०२५ अधिक्षक अभियंता, सा.बां.मंडळ यांचे कार्यालयात दु.१४.०० उघडण्यात येईल.

सर्वपात्र/ईच्छुक निविदाकारांनी निविदापत्रक डाऊनलोड करण्यासाठी व निविदाप्रक्रियेत भाग घेण्यासाठी ई-निविदा प्रणालिच्या https//mahatenders.gov.in या पोर्टलवर portal वर enrolled करणे आवश्यक आहे.

जा.क्र.ठावि/निविदा २८८८
कार्यकारी अभियंता यांचे कार्यालय,
सा.बां.विभाग क्र. १ ठाणे
दिनांक - २६/०३/२०२५

सही/-
कार्यकारी अभियंता
सा.बां.विभाग क्र.१ ठाणे

BH Capital

ONE STOP SOLUTION FOR ALL YOUR BUSINESS FINANCIAL NEEDS

UNSECURED BUSINESS LOAN

UNSECURED CORPORATE LOAN

UNSECURED MACHINERY LOAN

UNSECURED WORKING CAPITAL - CC / OD FACILITY

UNSECURED SALES & PURCHASE BILL DISCOUNTING

LOAN AGAINST PROPERTY

Ajay (MBA-Finance)
9321457879

Mumbai Office: A-5, 3rd Floor, Chadha Apartment Premises Co-op. Soc. Ltd., Teli Galli Cross Lane, Opp. Ginger Hotel, Andheri (E) - 400 069.

Registered Office: Office No. 7, B Wing, Pali Hill Apartment, Near Sadhu Vaswani Statue, Gol Maidan, Ulhasnagar - 421 002.

E-mail: info@bhcapital.in | www.bhcapital.in

आम सूचना

इस आम सूचना के माध्यम से मैं ललितकुमार सुरेशलाल सभागानी आम जनता को सूचित करना चाहता हूॅ कि मैंने श्रीमती रजनी घनश्यामदास चावला से उनकी मालकी वाली प्रापर्टी का सौदा नोटरी सेल एग्रीमेंट सीरियल नंबर 26/233, दिनांक 27/03/2025 के माध्यम से किया है। प्रापर्टी का विवरण है:- रूम, झुलेलाल कॉलोनी, बैश्रक नंबर 577 के पास, रूम नंबर 01, ओ.टी.सेक्शन, उल्हासनगर-2 तथा जिसका उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग में प्रापर्टी नंबर 19बीआई016089000 है।

उक्त प्रापर्टी को मैं ललितकुमार सुरेशलाल सभागानी अपने नाम पर करवाने हेतु उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग में अर्ज करने जा रहा हूॅ। अत: इस प्रापर्टी के संदर्भ में यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को किसी भी प्रकार का कोई भी लेना-देना हो या वाद-विवाद हो तो वे इस आम सूचना के प्रकाशित होने के 7 दिनों के भीतर उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग के उपायुक्त से संबंधित कागजातों के साथ लिखित में संपर्क करें। 7 दिनों बाद आये किसी भी ऐतराज को मान्य नहीं किया जायेगा और चेंज ऑफनेम की यह प्रक्रिया पूरी कर ली जायेगी।

सही:- ललितकुमार सुरेशलाल सभागानी। (U)